

2 शमूएल

दाऊद को शाऊल की मृत्यु का पता चलता है

1 अमालेकियों को पराजित करने के बाद दाऊद सिकलम लौटा और वहाँ दो दिन ठहरा। यह शाऊल की मृत्यु के बाद हुआ। ²तीसरे दिन एक युवक सिकलम आया। वह व्यक्ति उस डेरे से आया जहाँ शाऊल था। उस व्यक्ति के वस्त्र फटे थे और उसके सिर पर धूल थी। वह व्यक्ति दाऊद के पास आया। उसने दाऊद के सामने मुँह के बल गिरकर दण्डवत् किया।

³दाऊद ने उस व्यक्ति से पूछा, “तुम कहाँ से आये हो?”

उस व्यक्ति ने दाऊद को उत्तर दिया, “मैं इम्राएलियों के डेरे से बच निकला हूँ।”

⁴दाऊद ने उस से कहा, “कृपया मुझे यह बताओ कि युद्ध किसने जीता?”

उस व्यक्ति ने उत्तर दिया, “हमारे लोग युद्ध से भाग गए। युद्ध में अनेकों लोग गिरे और मर गये हैं। शाऊल और उसका पुत्र योनातन दोनों मर गये हैं।”

⁵दाऊद ने युवक से पूछा, “तुम कैसे जानते हो कि शाऊल और उसका पुत्र योनातन दोनों मर गए हैं?” ⁶युवक ने दाऊद से कहा, “मैं गिलबो पर्वत पर था। वहाँ मैंने शाऊल को अपने भाले पर झुकते देखा। पलिशती रथ और घुडसवार उसके निकट से निकट आते जा रहे थे। ⁷शाऊल पीछे मुड़ा और उसने मुझे देखा। उसने मुझे पुकारा। मैंने उत्तर दिया, मैं यहाँ हूँ। ⁸तब शाऊल ने मुझे पूछा, ‘तुम कौन हो?’ मैंने उत्तर दिया, ‘मैं अमालेकी हूँ।’ ⁹शाऊल ने कहा, ‘कृपया मुझे मार डालो। मैं बुरी तरह घायल हूँ और मैं पहले से ही लगभग मर चुका हूँ।’ ¹⁰इसलिये मैं रुका और उसे मार डाला। वह इतनी बुरी तरह घायल था कि मैं समझ गया कि वह जीवित नहीं रह सकता। तब मैंने उसके सिर से मुकुट और भुजा से बाजूबन्द उतारा और मेरे स्वामी, मैं मुकुट और बाजूबन्द यहाँ आपके लिये लाया हूँ।

¹¹तब दाऊद ने अपने वस्त्रों को यह प्रकट करने के लिये फाड़ डाला कि वह बहुत शोक में डूबा है। दाऊद के साथ सभी लोगों ने यही किया। ¹²वे बहुत दुःखी थे और रोये। उन्होंने शाम तक कुछ खाया नहीं। वे रोये क्योंकि शाऊल और उसका पुत्र योनातन मर गए थे। दाऊद और उसके लोग यहोवा से उन लोगों के लिये रोये जो मर गये थे, और वे इम्राएल के लिये रोये। वे इसलिये रोये कि शाऊल, उसका पुत्र योनातन और बहुत से इम्राएली युद्ध में मारे गये थे।

दाऊद अमालेकी युवक को मार डालने का आदेश देता है

¹³दाऊद ने उस युवक से बातचीत की जिसने शाऊल की मृत्यु की सूचना दी। दाऊद ने पूछा, “तुम कहाँ के निवासी हो?”

युवक ने उत्तर दिया, “मैं एक विदेशी का पुत्र हूँ। मैं अमालेकी हूँ।”

¹⁴दाऊद ने युवक से पूछा, “तुम यहोवा के चुने राजा को मारने से भयभीत क्यों नहीं हुए?”

¹⁵⁻¹⁶तब दाऊद ने अमालेकी युवक से कहा, “तुम स्वयं अपनी मृत्यु के लिये जिम्मेदार हो। तुमने कहा कि तुमने यहोवा के चुने हुये राजा को मार डाला। इसलिये तुम्हारे स्वयं के शब्दों ने तुम्हें अपराधी सिद्ध किया है।” तब दाऊद ने अपने सेवक युवकों में से एक युवक को बुलाया और अमालेकी को मार डालने को कहा। “इम्राएली युवक ने अमालेकी को मार डाला।

शाऊल और योनातन के बारे में दाऊद का शोकगीत

¹⁷दाऊद ने शाऊल और उसके पुत्र योनातन के बारे में एक शोकगीत गाया। ¹⁸दाऊद ने अपने व्यक्तियों से इस गीत को यहूदा के लोगों को सिखाने को कहा,

“इस शोकगीत को “धनुष” कहा गया है। यह गीत याशार की पुस्तक* में लिखा है।

- 19 “ओह इम्राएल, तुम्हारा सौन्दर्य तुम्हारे पहाड़ों में नष्ट हुआ। ओह, कैसे शक्तिशाली पुरुष धराशायी हो गए!
- 20 इसे गत* में न कहो। इसे अश्कलोन* की गलियों में घोषित न करो। इससे पलिशितयों के नगर प्रसन्न होंगे! खतनारहित* उत्सव मनायेंगे।
- 21 गिलबो के पर्वत पर ओस और वर्षा न हो, उन खेतों से आने वाली बलि-भेंट न हों। शक्तिशाली पुरुषों की ढाल वहाँ गन्दी हुई, शाऊल की ढाल तेल से चमकाई नहीं गई थी*।
- 22 योनातन के धनुष ने अपने हिस्से के शत्रुओं को मारा, और शाऊल की तलवार ने अपने हिस्से के शत्रुओं को मारा! उन्होंने उन व्यक्तियों के खून को छिड़का जो अब मर चुके हैं, उन्होंने शक्तिशाली व्यक्तियों की चर्बी को नष्ट किया है।
- 23 शाऊल और योनातन, एक दूसरे से प्रेम करते थे। वे एक दूसरे से सुखी रहे जब तक वे जीवित रहे, शाऊल-योनातन मृत्यु में भी साथ रहे! वे उकाब से तेज भी जाते थे, वे सिंह से अधिक शक्तिशाली थे।
- 24 इम्राएल की पुत्रियों, शाऊल के लिये रोओ! शाऊल ने तुम्हें लाल पहनावे दिये,

- शाऊल ने तुम्हारे वस्त्रों पर स्वर्ण आभूषण सजाए हैं।
- 25 शक्तिशाली पुरुष युद्ध में काम आए। योनातन गिलबो पर्वत पर मरा।
- 26 मेरे भाई योनातन, मैं तुम्हारे लिये रोता हूँ! मैंने तुम्हारी मित्रता का सुख इतना पाया, तुम्हारा प्रेम मेरे प्रति उससे भी अधिक गहरा था, जितना एक स्त्री का प्रेम होता है।
- 27 शक्तिशाली पुरुष युद्ध में काम आए, युद्ध के शस्त्र चले गये हैं।”

दाऊद और उसके लोग हेब्रोन जाते हैं

2 बाद में दाऊद ने यहोवा से प्रार्थना की। दाऊद ने कहा, “क्या मुझे यहूदा के किसी नगर में जाना चाहिये?”

यहोवा ने दाऊद से कहा, “जाओ।” दाऊद ने पूछा, “मुझे, कहाँ जाना चाहिये?” यहोवा ने उत्तर दिया, “हेब्रोन को।”

2 इसलिये दाऊद वहाँ गया। उसकी दोनों पत्नियाँ उसके साथ गईं। (वे यिज्जेली की अहीनोअम और कर्मेल के नाबाल की विधवा अबीगैल थीं।) 3 दाऊद अपने लोगों और उनके परिवारों को भी लाया। वे हेब्रोन तथा पास के नगर में बस गये।

दाऊद याबेश के लोगों को धन्यवाद देता है

4 यहूदा के लोग हेब्रोन आये और उन्होंने दाऊद का अभिषेक यहूदा के राजा के रूप में किया। तब उन्होंने दाऊद से कहा, “याबेश गिलाद के लोग ही थे जिन्होंने शाऊल को दफनाया।”

5 दाऊद ने याबेश गिलाद के लोगों के पास दूत भेजे। इन दूतों ने याबेश के लोगों को दाऊद का सन्देश दिया “यहोवा तुमको आशीर्वाद दे, क्योंकि तुम लोगों ने अपने स्वामी शाऊल के प्रति, उसकी दग्ध अस्थियों* को दफनाकर, दया दिखाई है।” यहोवा अब तुम्हारे प्रति दयालु और सच्चा रहेगा। मैं भी तुम्हारे प्रति दयालु रहूँगा क्योंकि तुम लोगों ने शाऊल की दग्ध अस्थियाँ दफनाई है। 7 अब शक्तिशाली और वीर बनो, तुम्हारे स्वामी शाऊल मर

उसकी दग्ध अस्थियों शाऊल और योनातन दोनों के शव जलाये गये थे। देखें शमू, 31:12

याशार की पुस्तक प्राचीन अनुपलब्ध पुस्तक जिसमें इम्राएल के युद्ध वर्णित थे।

गत यह पलिशितयों की प्राचीन राजधानी थी।

अश्कलोन पलिशती नगरों में से एक।

खतनारहित वे व्यक्ति जिनका खतना न हुआ हो। इसका तात्पर्य पलिशती था, यहूदी नहीं।

शाऊल की ... नहीं थी या शाऊल की ढाल का अभिषेक तेल से नहीं हुआ था।

चुके हैं और यहूदा के परिवार समूह ने अपने राजा के रूप में मेरा अभिषेक किया है।”

ईशबोशेत राजा होता है

⁸नेर का पुत्र अब्नेर शाऊल की सेना का सेनापति था अब्नेर शाऊल के पुत्र ईशबोशेत को महनैम ले गया। ⁹उस स्थान पर अब्नेर ने ईशबोशेत को गिलाद, आशेर, यिज्ज़ेल, एफ़्रैम और बिन्यामीन का राजा बनाया। ईशबोशेत सारे इज़्राएल का राजा बन गया।

¹⁰ईशबोशेत शाऊल का पुत्र था। ईशबोशेत चालीस वर्ष का था जब उसने इज़्राएल पर शासन करना आरम्भ किया। उसने दो वर्ष तक शासन किया। किन्तु यहूदा का परिवार समूह दाऊद का अनुसरण करता था। ¹¹दाऊद हेब्रोन में यहूदा के परिवार समूह का राजा सात वर्ष छः महीने तक रहा।

प्राणघातक मुकाबला

¹²नेर का पुत्र अब्नेर और शाऊल के पुत्र ईशबोशेत के सेवकों ने महनैम को छोड़ा। वे गिबोन को गए। ¹³सरूयाह का पुत्र योआब और दाऊद के सेवकगण भी गिबोन गए। वे अब्नेर और ईशबोशेत के सेवकों से, गिबोन के चश्में पर मिले। अब्नेर की टोली हौज के एक ओर बैठी थी। योआब की टोली हौज की दूसरी ओर बैठी थी।

¹⁴अब्नेर ने योआब से कहा, “हम लोग युवकों को खड़े होने दें और यहाँ एक मुकाबला हो जाने दो।” योआब ने कहा, “हाँ, उनमें मुकाबला हो जाने दो।”

¹⁵तब युवक उठे। दोनों टोलियों ने मुकाबले के लिये अपने युवकों को गिना। दाऊद के सैनिकों में से बारह युवक चुने गये। ¹⁶हर एक युवक ने अपने शत्रु के सिर को पकड़ा और अपनी तलवार अन्दर भोंक दी। अतः युवक एक ही साथ गिर पड़े। यही कारण है कि वह स्थान “तेज चाकुओं का खेत” कहा जाता है। यह स्थान गिबोन में है।

अब्नेर असाहेल को मार डालता है

¹⁷उस दिन मुकाबला भयंकर युद्ध में बदल गया। दाऊद के सेवकों ने अब्नेर और इज़्राएलियों को हरा दिया। ¹⁸सरूयाह के तीन पुत्र थे, योआब, अबीश और असाहेल। असाहेल तेज दौड़नेवाला था। वह जंगली हिरन की तरह

तेज दौड़ता था। ¹⁹असाहेल ने अब्नेर का पीछा किया। असाहेल सीधे अब्नेर की ओर दौड़ गया। ²⁰अब्नेर ने मुड़कर देखा और पूछा, “क्या तुम असाहेल हो?” असाहेल ने कहा, “मैं हूँ।”

²¹अब्नेर असाहेल को चोट नहीं पहुँचाना चाहता था। तब अब्नेर ने असाहेल से कहा, “मेरा पीछा करना छोड़ो अपनी दायीं या बाईं ओर मुड़ो और युवकों में से किसी एक की कवच अपने लिये ले लो।” किन्तु असाहेल ने अब्नेर का पीछा करना छोड़ने से इन्कार कर दिया।

²²अब्नेर ने असाहेल से फिर कहा, “मेरा पीछा करना छोड़ो। यदि तुम पीछा करना नहीं छोड़ते तो मैं तुमको मार डालूँगा। यदि मैं तुम्हें मार डालूँगा तो मैं फिर तुम्हारे भाई योआब का मुख नहीं देख सकूँगा।”

²³किन्तु असाहेल ने अब्नेर का पीछा करना नहीं छोड़ा। इसलिये अब्नेर ने अपने भाले के पिछले भाग का उपयोग किया और असाहेल के पेट में उसे घुसेड़ दिया। भाला असाहेल के पेट में इतना गहरा धँसा कि वह उसकी पीठ से बाहर निकल आया। असाहेल वहीं तुरन्त मर गया।

योआब और अबीश अब्नेर का पीछा करते हैं

असाहेल का शरीर जमीन पर गिर पड़ा। लोग उस के पास दौड़कर गये, और रुक गए। ²⁴किन्तु योआब और अबीश* ने अब्नेर का पीछा करना जारी रखा।

जिस समय वे अम्मा पहाड़ी पर पहुँचे सूर्य डूब रहा था। (अम्मा पहाड़ी गीह के सामने गिबोन मरुभूमि के रास्ते पर थी।) ²⁵बिन्यामीन परिवार समूह के लोग अब्नेर के पास आए। वे सभी एक साथ पहाड़ी की चोटी पर खड़े हो गए।

²⁶अब्नेर ने चिल्लाकर योआब को पुकारा। अब्नेर ने कहा, “क्या हमें लड़ जाना चाहिये और सदा के लिये एक दूसरे को मार डालना चाहिये? निश्चय ही तुम जानते हो कि इसका अन्त केवल शोक होगा। लोगों से कहो कि अपने ही भाईयों का पीछा करना बन्द करें।”

²⁷तब योआब ने कहा, “यह तुमने जो कहा वह ठीक है। यहीवा शाश्वत है, यदि तुमने कुछ कहा नहीं होता तो लोग अपने भाइयों का पीछा सवेरे तक भी करते रहते।”

योआब और अबीश योआब और अबीश उस असाहेल के भाई थे, जिसे अब्नेर ने मार डाला। देखे वचन 18

28 तब योआब ने एक तुरही बजाई और उसके लोगों ने इम्राएलियों का पीछा करना बन्द किया। उन्होंने और आगे इम्राएलियों से लड़ने का प्रयत्न नहीं किया।

29 अब्नेर और उसके लोग यरदन घाटी से होकर रात भर चले। उन्होंने यरदन घाटी को पार किया। वे पूरे दिन चलते रहे और महनैम पहुँचे।

30 योआब अब्नेर का पीछा करना बन्द करने के बाद अपनी सेना में वापस लौट गया। जब योआब ने लोगों को इकट्ठा किया, दाऊद के उन्नीस सेवक लापता थे। असाहेल भी लापता था। 31 किन्तु दाऊद के सेवकों ने बिन्यामीन परिवार समूह के तीन सौ साठ सदस्यों को, जो अब्नेर का अनुसरण कर रहे थे, मार डाला था। 32 दाऊद के सेवकों ने असाहेल को लिया और उसे बेतलेहेम में उसके पिता के कब्रिस्तान में दफनाया।

योआब और उसके व्यक्ति रात भर चलते रहे। जब वे हेब्रोन पहुँचे तो सूरज निकला।

इम्राएल और यहूदा के बीच युद्ध

3 शाऊल के परिवार और दाऊद के परिवार में लम्बे समय तक युद्ध चलता रहा।* दाऊद अधिकाधिक शक्तिशाली होता गया। और शाऊल का परिवार कमजोर पर कमजोर होता गया।

दाऊद के छः पुत्र हेब्रोन में उत्पन्न हुए

2 दाऊद के ये छः पुत्र हेब्रोन में उत्पन्न हुए थे। प्रथम पुत्र अम्नोन था। अम्नोन की माँ यिज़ेल की अहीनोअम थी। 3 दूसरा पुत्र किलाब था। किलाब की माँ कर्मेल के नाबाल की विधवा अबीगैल थी। तीसरा पुत्र अबशालोम था। अबशालोम की माँ गशूर के राजा तल्मै की पुत्री माका थी। 4 चौथा पुत्र अदोनियाह था। अदोनियाह की माँ हग्गीत थी। पाँचवा पुत्र शपत्याह था। शपत्याह की माँ अबीतल थी। 5 छठा पुत्र यित्राम था। यित्राम की माँ दाऊद की पत्नी एग्ला थी। दाऊद के ये छः पुत्र हेब्रोन में उत्पन्न हुए।

शाऊल के ... रहा यहूदा का परिवार समूह दाऊद का अनुसरण करता था। वे उन दूसरे परिवार समूहों के साथ युद्ध करते थे, जो शाऊल का अनुसरण करते थे।

अब्नेर दाऊद से मिल जाने का निर्णय करता है

6 जिस समय शाऊल परिवार तथा दाऊद परिवार में युद्ध चल रहा था, अब्नेर ने अपने को शाऊल की सेना में शक्तिशाली बना लिया। 7 शाऊल की दासी रिस्पा नाम की थी। रिस्पा अय्या की पुत्री थी। ईशबोशेत ने अब्नेर से कहा, "तुम मेरे पिता की दासी के साथ शारीरिक सम्बन्ध क्यों करते हो?"

8 अब्नेर, ईशबोशेत ने जो कुछ कहा, उस से बहुत क्रोधित हुआ। अब्नेर ने कहा, "मैं शाऊल और उसके परिवार का भक्त रहा हूँ। मैंने तुम को दाऊद को नहीं दिया, मैंने तुमको उसे हराने नहीं दिया। मैं यहूदा के लिये काम करने वाला देशद्रोही नहीं हूँ।* किन्तु अब तुम कह रहे हो कि मैंने यह बुराई की। 9-10 मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि अब परमेश्वर ने जो कहा है वह होगा। यहोवा ने कहा कि वह शाऊल के परिवार के राज्य को ले लेगा और इसे दाऊद को देगा। यहोवा दाऊद को यहूदा और इम्राएल का राजा बनायेगा। वह दान से लेकर बेशैबा तक शासन करेगा। परमेश्वर मेरे साथ बुरा करे यदि मैं वैसा होने में सहायता नहीं करता।"

11 ईशबोशेत अब्नेर से कुछ भी नहीं कह सका। ईशबोशेत उससे बहुत अधिक भयभीत था।

12 अब्नेर ने दाऊद के पास दूत भेजे। अब्नेर ने कहा, "तुम इस देश पर शासन करो। मेरे साथ एक सन्धि करो और मैं तुमको पूरे इम्राएल के लोगों का शासक बनने में सहायता करूँगा।"

13 दाऊद ने उत्तर दिया, "ठीक है! मैं तुम्हारे साथ सन्धि करूँगा। किन्तु तुमसे मैं केवल एक बात कहता हूँ कि जब तुम मुझसे मिलने आओ तब शाऊल की पुत्री मीकल को अवश्य लाना।"

दाऊद अपनी पत्नी मीकल को वापस पाता है

14 दाऊद ने शाऊल के पुत्र ईशबोशेत के पास दूत भेजे। दाऊद ने कहा, "मेरी पत्नी मीकल को मुझे वापस करो। मैंने उसे पाने के लिये सौ पलिशित्यों को मारा था।"*

15 तब ईशबोशेत ने उन लोगों से कहा कि वह लैश के पुत्र पलतीएल नामक व्यक्ति के पास से मीकल को ले

मैं नहीं हूँ शाब्दिक "क्या मैं यहूदा के कुत्ते का सिर हूँ? मैंने मारा था शाब्दिक, "मैंने उसके लिये सौ पलिशित्यों के खलडियों में दिया था।"

आए। ¹⁶मीकल का पति पलतीएल मीकल के साथ गया। वह बहुरीम नगर तक मीकल के पीछे-पीछे रोता हुआ गया। किन्तु अब्नेर ने पलतीएल से कहा, “घर लौट जाओ।” इसलिये पलतीएल घर लौट गया।

अब्नेर दाऊद की सहायता की प्रतिज्ञा करता है

¹⁷अब्नेर ने इम्राएल के प्रमुखों को यह सन्देश भेजा। उसने कहा, “आप लोग दाऊद को अपना राजा बनाने के इच्छुक थे। ¹⁸अब इसे करें! यहोवा दाऊद के बारे में कह रहा था जब उसने कहा था, ‘मैं अपने इम्राएली लोगों को पलिशितयों और उनके अन्य सभी शत्रुओं से बचाऊँगा। मैं यह अपने सेवक दाऊद द्वारा करूँगा।’”

¹⁹अब्नेर ने ये बातें बिन्यामीन के परिवार समूह के लोगों से कही। अब्नेर ने जो कुछ कहा वह बिन्यामीन परिवार के लोगों तथा इम्राएल के सभी लोगों को अच्छा लगा। अतः अब्नेर ने हेब्रोन में दाऊद से वे सभी बातें बतायीं, जिसे करने में इम्राएल के लोग तथा बिन्यामीन परिवार के लोग सहमत थे।

²⁰जब अब्नेर दाऊद के पास हेब्रोन आया। वह अपने साथ बीस लोगों का लाया। दाऊद ने अब्नेर को और उसके साथ आए सभी लोगों को दावत दी।

²¹अब्नेर ने दाऊद से कहा, “स्वामी, मेरे राजा, मैं जाऊँगा और सभी इम्राएलियों को आपके पास लाऊँगा। तब वे आपके साथ सन्धि करेंगे, और आप पूरे इम्राएल पर शासन करेंगे जैसा आप चाहते हैं।”

तब दाऊद ने अब्नेर को विदा किया और अब्नेर शान्तिपूर्वक गया।

अब्नेर की मृत्यु

²²योआब और दाऊद के अधिकारी युद्ध से लौटकर आए। उनके पास बहुत कीमती सामान थे जो वे शत्रु से लाए थे। दाऊद ने अब्नेर को शान्तिपूर्वक जाने दिया था। इसलिए अब्नेर दाऊद के साथ हेब्रोन में नहीं था। ²³योआब और उसकी सारी सेना हेब्रोन पहुँची। सेना ने योआब से कहा कि, “नेर का पुत्र अब्नेर राजा दाऊद के पास आया था और दाऊद ने उसे शान्तिपूर्वक जाने दिया।”

²⁴योआब राजा के पास आया और कहा, “यह आपने क्या किया? अब्नेर आपके पास आया और आपने उसे बिना चोट पहुँचाये जाने दिया। क्यों? ²⁵आप नेर के

पुत्र अब्नेर को जानते हैं। वह आपके साथ चाल चलने आया। वह उन सभी बातों का पता करने आया था जो आप कर रहे हैं।”

²⁶योआब ने दाऊद को छोड़ा और सीरा के कुँए पर अब्नेर के पास दूत भेजे। दूत अब्नेर को वापस लाये। किन्तु दाऊद को इसका पता न चला। ²⁷जब अब्नेर हेब्रोन आया तो योआब, प्रवेशद्वार के एक किनारे उसे ले गया और तब योआब न अब्नेर के पेट में प्रहार किया और अब्नेर मर गया। पिछले दिनों में अब्नेर ने योआब के भाई असाहेल को मारा था। अतः अब योआब ने अब्नेर को मारा डाला।

दाऊद अब्नेर के लिये रोता है

²⁸बाद में दाऊद ने यह समाचार सुना। दाऊद ने कहा, “मैं और मेरा राज्य नेर के पुत्र अब्नेर की मृत्यु के लिये निरपराध है। यहोवा इसे जानता है। ²⁹योआब और उसका परिवार इसके लिये उत्तरदायी है और उसका पूरा परिवार इसके लिए दोषी है। मुझे आशंका है कि योआब के परिवार पर बहुत विपत्तियाँ आएंगी। मुझे यह आशा है कि उसके परिवार में सदा कोई न कोई जखम से अथवा भयानक चर्मरोग से पीड़ित होगा, और कोई बैसाखी उपयोग में लाएगा, और कोई युद्ध में मारा जाएगा और कोई बिना भोजन रहेगा।”

³⁰योआब और उसके भाई अबीशै ने अब्नेर को मार डाला क्योंकि अब्नेर ने उसके भाई असाहेल को गिबोन की लड़ाई में मारा था।

³¹⁻³²दाऊद ने योआब के साथ के सभी व्यक्तियों से कहा, “अपने वस्त्रों को फाड़ो और शोक वस्त्रों पहनो। अब्नेर के लिये रोओ।” उन्होंने अब्नेर को हेब्रोन में दफनाया। दाऊद अंत्येष्टि में दाऊद अर्थी के पीछे गया। राजा दाऊद और सभी लोग अब्नेर की कब्र पर रोए।

³³दाऊद ने अब्नेर के लिये अपना शोक-गीत गाया:

“क्या अब्नेर को किसी मूर्ख की तरह मरना था?

³⁴ अब्नेर, तुम्हारे हाथ बंधे नहीं थे।

तुम्हारे पैर जंजीरों में कसे नहीं थे।

नहीं अब्नेर, तुम्हें दुष्टों ने मरा!”

तब सभी लोग फिर अब्नेर के लिये रोये। ³⁵सभी लोग दाऊद को दिन रहते भोजन करने के लिये प्रेरित करने आए। किन्तु दाऊद ने विशेष प्रतिज्ञा की। उसने कहा,

“परमेश्वर मुझे दण्ड दे और मेरे कष्टों को बढ़ाएं यदि मैं सूरज डूबने के पहले रोटी या कोई अन्य भोजन करूँ।”³⁶ जो कुछ हुआ सभी लोगों ने देखा और वे उन सभी कामों से सहमत हुए जो राजा दाऊद कर रहा था।³⁷ उस दिन यहूदा के लोगों और सभी इज़्राएलियों ने समझ लिया कि राजा दाऊद वह व्यक्ति नहीं जिसने नेर के पुत्र अब्नेर को मारा।

³⁸ राजा दाऊद ने अपने सेवकों से कहा, “तुम लोग जानते हो कि आज इज़्राएल में एक बहुत महत्वपूर्ण व्यक्ति मर गया है।³⁹ ये उसी दिन हुआ जिस दिन मेरा अभिषेक राजा के रूप में हुआ था किन्तु सरूयाह के पुत्र मुझसे अधिक उग्र हैं। यहोवा इन व्यक्तियों को अवश्य दण्ड दे।”

शाऊल के परिवार में परेशानियाँ आती हैं

4 शाऊल के पुत्र (ईशबोशेत) ने सुना कि अब्नेर की मृत्यु हेब्रोन में हो गई। ईशबोशेत और उसके सभी लोग बहुत अधिक भयभीत हो गये।² दो आदमी शाऊल के पुत्र (ईशबोशेत) को देखने गये। ये दोनों आदमी सेना के सेनापति थे। एक व्यक्ति का नाम बाना था और दूसरे का नाम रेकाब था। बाना और रेकाब बेरोत के रिम्मोन के पुत्र थे। (वे बिन्यामीन परिवार समूह के थे। बेरोत नगर बिन्यामीन परिवार समूह का था।³ बेरोत के लोग गितैम को भाग गए और वे आज तक वहाँ रहते हैं।)

⁴ शाऊल के पुत्र योनातन का एक पुत्र मपीबोशेत था जो लंगड़ा था। योनातन का पुत्र उस समय पाँच वर्ष का था, जब यह सूचना मिली थी कि शाऊल और योनातन यिज़्रेल में मारे गए। इस पुत्र की धायी ने इस बच्चे को उठाया और वह भाग गई। किन्तु जब धायी ने भागने में जल्दी की तो योनातन का पुत्र उसकी बाँहों से गिर पड़ा। यही कारण था कि योनातन का पुत्र लंगड़ा हो गया था। इस पुत्र का नाम मपीबोशेत है।

⁵ बेरोत के रिम्मोन के पुत्र रेकाब और बाना दोपहर को ईशबोशेत के महल में घुसे। ईशबोशेत गर्मी के कारण आराम कर रहा था।⁶ रेकाब और बाना महल के बीच में इस प्रकार आये मानों वे कुछ गेहूँ लेने जा रहे हों। ईशबोशेत अपने बिस्तर में अपने शयनकक्ष में लेटा हुआ था। रेकाब और बाना ने आघात किया और ईशबोशेत को मार डाला। तब उन्होंने उसका सिर काटा और उसे

अपने साथ ले गये। वे यरदन घाटी से होकर रात भर चलते रहे।⁸ वे हेब्रोन पहुँचे, और उन्होंने ईशबोशेत का सिर दाऊद को दिया।

रेकाब और बाना ने राजा दाऊद से कहा, “यह आपके शत्रु शाऊल के पुत्र ईशबोशेत का सिर है। उसने आपको मारने का प्रयत्न किया। यहोवा ने शाऊल और उसके परिवार को आपके लिये आज दण्ड दिया है।”

⁹ दाऊद ने रेकाब और उसके भाई बाना को उत्तर दिया, दाऊद ने कहा, “निश्चय ही, यहोवा शाश्वत है, उसने मुझे सभी आपत्तियों से बचाया है।¹⁰ किन्तु एक व्यक्ति ने यह सोचा था कि वह मेरे लिये अच्छी खबर लायेगा। उसने मुझसे कहा, ‘देखो! शाऊल मर गया।’ उसने सोचा था कि मैं उसे इस खबर को लाने के कारण पुरस्कार दूँगा। किन्तु मैंने उस व्यक्ति को पकड़ा और सिकलग में मार डाला।¹¹ इसलिये मैं तुम लोगों को मारना चाहूँगा और तुमको धरती से हटाऊँगा क्योंकि दुष्ट व्यक्तियों ने एक अच्छे व्यक्ति को अपने घर के शयनकक्ष में बिस्तर पर आराम करते समय मार डाला।”

¹² दाऊद ने युवकों को आदेश दिया कि वे रेकाब और बाना को मार डालें। तब युवकों ने रेकाब और बाना के हाथ-पैर काट डाले और हेब्रोन के चश्मे के सहारे लटका कर मार डाला। तब उन्होंने ईशबोशेत के सिर को लिया और उसी स्थान पर उसे दफनाया जिस स्थान पर हेब्रोन में अब्नेर को दफनाया गया था।

इज़्राएली दाऊद को राजा बनाते हैं

5 तब इज़्राएल के सारे परिवार समूहों के लोग दाऊद के पास हेब्रोन में आए। उन्होंने दाऊद से कहा, “देखो हम सब एक परिवार* के हैं।² बीते समय में जब शाऊल हमारा राजा था तो वे आप ही थे जो इज़्राएल के लिये युद्ध में हमारा नेतृत्व करते थे और आप इज़्राएल को युद्धों से वापस लाये। यहोवा ने आपसे कहा, ‘तुम मेरे लोग अर्थात् इज़्राएलियों के गर्दिरिया होगे। तुम इज़्राएल के शासक होगे।’”

³ इज़्राएल के सभी प्रमुख, राजा दाऊद के पास, हेब्रोन में आए। राजा दाऊद ने यहोवा के सामने, हेब्रोन में, इन प्रमुखों के साथ एक सन्धि की। तब प्रमुखों ने इज़्राएल के राजा के रूप में दाऊद का अभिषेक किया।

एक परिवार शाब्दिक “आपके रक्त - माँस।”

⁴दाऊद उस समय तीस वर्ष का था जब उसने शासन करना आरम्भ किया। उसने चालीस वर्ष शासन किया। ⁵उसने हेब्रोन में यहूदा पर सात वर्ष, छः महीने तक शासन किया और उसने, सारे इम्राएल और यहूदा पर यरूशलेम में तैंतीस वर्ष तक शासन किया।

दाऊद यरूशलेम नगर को जीतता है

⁶राजा और उसके लोग यरूशलेम में यबूसियों के विरुद्ध गए। यबूसी वे लोग थे जो उस प्रदेश में रहते थे। यबूसियों ने दाऊद से कहा, “तुम हमारे नगर में नहीं आ सकते।* यहाँ तक कि अन्धे और लंगड़े भी तुमको रोक सकते हैं।” (वे ऐसा इसलिये कह रहे थे क्योंकि वे सोचते थे की दाऊद उनके नगर में प्रवेश करने की क्षमता नहीं रखता। ⁷किन्तु दाऊद ने सिष्योन का किला ले लिया। यह किला दाऊद-नगर बना।)

⁸उस दिन दाऊद ने अपने लोगों से कहा, “यदि तुम लोग यबूसियों को हराना चाहते हो तो जलसुरंग* से जाओ, और उन ‘अन्धे तथा अपाहिज’ शत्रुओं पर हमला करो।” यही कारण है कि लोग कहते हैं “अन्धे और विकलांग उपासना गृह में नहीं आ सकते।”

⁹दाऊद किले में रहता था और इसे “दाऊद का नगर” कहता था। दाऊद ने उस क्षेत्र को बनाया और मिल्लो* नाम दिया। उसने नगर के भीतर अन्य भवन भी बनाये। ¹⁰दाऊद अधिकाधिक शक्तिशाली होता गया क्योंकि सर्वशक्तिमान यहोवा उसके साथ था।

¹¹सौर के राजा हीराम ने दाऊद के पास दूतों को भेजा। हीराम ने देवदारू के पेड़, बड़ई और राजमिस्री लोगों को भी भेजा। उन्होंने दाऊद के लिये एक महल बनाया। ¹²उस समय दाऊद जानता था कि यहोवा ने उसे सचमुच इम्राएल का राजा बनाया है, और दाऊद यह भी जानता था कि यहोवा ने उसके राज्य को परमेश्वर के

तुम ... नहीं आ सकते यरूशलेम का नगर पहाड़ी पर बसा था और नगर के चारों ओर ऊँची दीवार थी। अतः अधिकार करने में कठिनाई थी।

जल सुरंग वहाँ एक जल सुरंग थी जो भूमि में नीचे प्राचीन यरूशलेम नगर में जाती थी। दाऊद और उसके व्यक्तियों ने नगर में पहुंचने के लिये इस सुरंग का उपयोग किया।

मिल्लो संभवतः सर्वाधिक सुरक्षित दृढ़ स्थान जो सिम्मोन का प्राचीन किला था।

लोगों, अर्थात् इम्राएलियों के लिये बहुत महत्वपूर्ण बनाया है।

¹³दाऊद हेब्रोन से यरूशलेम चला गया। यरूशलेम में दाऊद ने और अधिक दासियों तथा पत्नियों को प्राप्त किया। दाऊद के कुछ दूसरे बच्चे भी यरूशलेम में हुए। ¹⁴यरूशलेम में उत्पन्न हुए दाऊद के पुत्रों के नाम ये हैं : शम्मू, शोबाब, नातान, सुलैमान, ¹⁵यिभार, एलोशू, नेपेग, यापी, ¹⁶एलीशामा, एल्यादा तथा एलीपेलेत।

दाऊद पलिशतयों के विरुद्ध युद्ध में जाता है

¹⁷पलिशतयों ने यह सुना कि इम्राएलियों ने दाऊद का अभिषेक इम्राएल के राजा के रूप में किया है तब सभी पलिशती दाऊद को मार डालने के लिये उसकी खोज करने निकले। किन्तु दाऊद को यह सूचना मिल गई। वह एक किले में चला गया। ¹⁸पलिशती आए और रपाईम की घाटी में उन्होंने अपना डेरा डाला।

¹⁹दाऊद ने बात करके यहोवा से पूछा, “क्या मुझे पलिशतयों के विरुद्ध युद्ध में जाना चाहिये? क्या तू मुझे पलिशतयों को हराने देगा?”

यहोवा ने दाऊद से कहा, “जाओ, क्योंकि मैं निश्चय ही, पलिशतयों को हराने में तुम्हारी सहायता करूँगा।”

²⁰तब दाऊद बालपरासीम आया। वहाँ उसने पलिशतयों को हरया। दाऊद ने कहा, “यहोवा ने मेरे सामने मेरे शत्रुओं की सेना को इस प्रकार दौड़ भगाया जैसे जल बांध को तोड़ कर बहता है।” यही कारण है कि दाऊद ने उस स्थान का नाम “बालपरासीम”* रखा। ²¹पलिशतयों ने बालपरासीम में अपनी देवमूर्तियों को पीछे छोड़ दिया। दाऊद और उसके लोगों ने उन देवमूर्तियों को वहाँ से हटा दिया।

²²पलिशती फिर आये और रपाईम की घाटी में उन्होंने डेरा डाला।

²³दाऊद ने यहोवा से प्रार्थना की। इस समय यहोवा ने कहा, “वहाँ मत जाओ। उनके चारों ओर उनकी सेना के पीछे से जाओ। तूत वृक्षों के पास उन पर आक्रमण करो। ²⁴तूत वृक्षों की चोटी से तुम पलिशतयों के सामरिक प्रमाण की ध्वनि को सुनोगे। तब तुम्हें शीघ्रता करनी

बालपरासीम हिब्रू में इस नाम का अर्थ है, “यहोवा तोड़ निकालता है।”

चाहिये, क्योंकि उस समय यहोवा जायेगा और तुम्हारे लिये पलिशितियों को हरा देगा।”

²⁵दाऊद ने वही किया जो करने के लिये यहोवा ने आदेश दिया था। उसने पलिशितियों को हराया। उसने उनका पीछा लगातार गेबा से गेजेर तक किया।

परमेश्वर का पवित्र सन्दूक यरूशलेम लाया गया

6 दाऊद ने फिर इम्राएल के सभी चुने तीस हजार लोगों को इकट्ठा किया। ²तब दाऊद और उसके सभी लोग यहूदा के बाले* में गये और परमेश्वर के पवित्र सन्दूक को यहूदा के बाले से लेकर उसे यरूशलेम में ले आए। लोग पवित्र सन्दूक के पास यहोवा की उपासना करने के लिये जाते हैं। पवित्र सन्दूक यहोवा के सिंहासन की तरह है। पवित्र सन्दूक के ऊपर करूब की मूर्तियाँ हैं, और यहोवा इन स्वर्गदूतों पर राजा की तरह बैठता है। ³उन्होंने परमेश्वर के पवित्र सन्दूक को एक नई गाड़ी में रखा। वे गिबियाह में स्थित अबीनादाब के घर से पवित्र सन्दूक को ले जा रहे थे। उज्जा और अहह्यो नई गाड़ी चला रहे थे।

⁴जब वे गिबियाह में अबीनादाब के घर से पवित्र सन्दूक ले जा रहे थे, तब उज्जा परमेश्वर के पवित्र सन्दूक सहित गाड़ी में बैठा था। अहह्यो पवित्र सन्दूक वाली गाड़ी के आगे आगे चल कर संचालन कर रहा था। ⁵दाऊद और सभी इम्राएली यहोवा के सामने पूरे उत्साह के साथ नाच और गा रहे थे। ये संगीत वाद्य सनौवर लकड़ी के बने थे। वे वीणा, सितार, ढोल झांझ, और मंजीरा बजा रहे थे। ⁶जब दाऊद के लोग नकोन खलिहान में आये तो बैल लड़खड़ा पड़े। परमेश्वर का पवित्र सन्दूक बन्द गाड़ी से गिरने लगा। उज्जा ने पवित्र सन्दूक को पकड़ लिया। ⁷यहोवा उज्जा पर क्रोधित हुआ और उसे मार डाला।* उज्जा ने पवित्र सन्दूक को छूकर परमेश्वर के प्रति अश्रद्धा दिखाई। उज्जा वहाँ परमेश्वर के पवित्र सन्दूक के बगल में मरा। ⁸दाऊद निराश हो

यहूदा के बाला किर्यत्थारिम का अन्य नाम देखें। इति. 13:6

यहोवा ... मार डाला केवल लेविवंशी परमेश्वर की पवित्र सन्दूक या पवित्र तम्बू से कोई उपासना गृह-सामग्री ले जा सकते थे। उज्जा लेविवंशी नहीं था। देखें गिनती 1:50

गया क्योंकि यहोवा ने उज्जा को मार डाला था। दाऊद ने उस स्थान को “पेरेसुज्जा”* कहा।

⁹दाऊद उस दिन यहोवा से डर गया। दाऊद ने कहा, “अब मैं यहोवा का पवित्र सन्दूक यहाँ कैसे ला सकता हूँ?” ¹⁰इसलिये दाऊद यहोवा के पवित्र सन्दूक को दाऊद नगर में नहीं ले जाना चाहता था। दाऊद ने पवित्र सन्दूक को गत से आये हुये ओबेद-एदोम* के घर में रखा। दाऊद पवित्र सन्दूक को सड़क से गत के ओबेद-एदोम के घर ले गया। ¹¹यहोवा का सन्दूक ओबेद-एदोम के घर में तीन महीने तक रहा। यहोवा ने ओबेद-एदोम और उसके सारे परिवार को आशीर्वाद दिया।

¹²लोगों ने दाऊद से कहा, “यहोवा ने ओबेद-एदोम के परिवार और उसकी सारी चीजों को आशीर्वाद दिया क्योंकि परमेश्वर का पवित्र सन्दूक वहाँ है।” इसलिये दाऊद गया और ओबेद-एदोम के घर से परमेश्वर के पवित्र सन्दूक को दाऊद नगर से ले आया। दाऊद ने इसे प्रसन्नता से किया। ¹³जब यहोवा के पवित्र सन्दूक को ले चलने वाले छः कदम चले तो वे रुक गये और दाऊद ने एक बैल तथा एक मोटे बछड़े की बलि भेंट की। ¹⁴तब दाऊद ने यहोवा के सामने पूरे उत्साह के साथ नृत्य किया। दाऊद ने एपोद पहन रखा था।

¹⁵दाऊद और सभी इम्राएली यहोवा के पवित्र सन्दूक को नगर लाते समय उल्लास से उद्घोष करने और तुरही बजाने लगे। ¹⁶शाऊल की पुत्री मीकल खिड़की से देख रही थी। जब यहोवा का पवित्र सन्दूक नगर में आया तो दाऊद यहोवा के सामने नाच-कूद कर रहा था। मीकल ने यह देखा और वह दाऊद पर गुस्सा हो गई। उसने सोचा कि वह अपने आप को मूर्ख सिद्ध कर रहा है।

¹⁷दाऊद ने पवित्र सन्दूक के लिये एक तम्बू लगाया। इम्राएलियों ने यहोवा के सन्दूक को तम्बू में उसकी जगह पर रखा। तब दाऊद ने होमबलि और मेलबलि यहोवा को चढ़ाई।

¹⁸जब दाऊद ने होमबलि और मेलबलि चढ़ाना पूरा किया तब उसने सर्वशक्तिमान यहोवा के नाम पर लोगों को आशीर्वाद दिया। ¹⁹दाऊद ने रोटी, किशमिश का टुकड़ा, और खजूर की रोटी का हिस्सा इम्राएल के हर

पेरेसुज्जा इस नाम का हिब्रू में अर्थ है - “उज्जा को दण्ड।” गत ... ओबेद-एदोम लेवि परिवार समूह का एक व्यक्ति जो यरूशलेम के समीप रहता था।

एक स्त्री-पुरुष को दिया। तब सभी लोग अपने घर गये।

मीकल दाऊद को डाँटती है

²⁰दाऊद अपने घर में आशीर्वाद देने गया। किन्तु शाऊल की पुत्री मीकल उससे मिलने निकल आई। मीकल ने कहा, “आज इब्राएल के राजा ने अपना ही सम्मान नहीं किया। तुमने अपनी प्रजा की दासियों के सामने अपने वस्त्र उतार दिये। तुम उस मूर्ख की तरह थे जो बिना लज्जा के अपने वस्त्र उतारता है!”

²¹तब दाऊद ने मीकल से कहा, “यहोवा ने मुझे चुना है, न कि तुम्हारे पिता और उसके परिवार के किसी व्यक्ति ने। यहोवा ने मुझे इब्राएल के अपने लोगों का मार्ग दर्शक बनने के लिये चुना। यही कारण है कि मैं यहोवा के सामने उत्सव मनाऊँगा और नृत्य करूँगा। ²²संभव है, मैं तुम्हारी दृष्टि में अपना सम्मान खो दूँ। संभव है मैं तुम्हारी निगाह में ही कुछ गिर जाऊँ। किन्तु जिन लड़कियों के बारे में तुम बात करती हो वे मेरा सम्मान करती हैं।”

²³शाऊल की पुत्री को कभी सन्तान न हुई। वह बिना सन्तान के मरी।

दाऊद एक उपासना गृह बनाना चाहता है

7 जब राजा दाऊद अपने नये घर गया। यहोवा ने उसके चारों ओर के शत्रुओं से उसे शान्ति दी। ²राजा दाऊद ने नातान नबी से कहा, “देखो, मैं देवदारु की लकड़ी से बने महल में रह रहा हूँ। किन्तु परमेश्वर का पवित्र सन्दूक अब भी तम्बू में रखा हुआ है।”

³नातान ने राजा दाऊद से कहा, “जाओ, और जो कुछ तुम करना चाहते हो, करो। यहोवा तुम्हारे साथ होगा।”

⁴किन्तु उसी रात नातान को यहोवा का सन्देश मिला। ⁵यहोवा ने कहा, “जाओ, और मेरे सेवक दाऊद से कहो, ‘यहोवा यह कहता है: तुम वह व्यक्ति नहीं हो जो मेरे रहने के लिये एक गृह बनाये। ⁶मैं उस समय गृह में नहीं रहता था जब मैं इब्राएलियों को मिश्र से बाहर लाया। नहीं, मैं उस समय से चारों ओर तम्बू में यात्रा करता रहा। मैंने तम्बू का उपयोग अपने घर के रूप में किया। ⁷मैंने इब्राएल के किसी भी परिवार समूह से देवदारु की लकड़ी का सुन्दर घर अपने लिए बनाने के लिए नहीं कहा।’

⁸‘तुम्हें मेरे सेवक दाऊद से यह कहना चाहिये: सर्वशक्तिमान यहोवा यह कहता है, ‘मैं तुम्हें चरागाह से लाया। मैंने तुम्हें तब अपनाया जब तुम भेड़े चरा रहे थे। मैंने तुमको अपने लोग इब्राएलियों का मार्ग दर्शक चुना। ⁹मैं तुम्हारे साथ तुम जहाँ कहीं गए रहा। मैंने तुम्हारे शत्रुओं को तुम्हारे लिये पराजित किया। मैं तुम्हें पृथ्वी महान व्यक्तियों में से एक बनाऊँगा। ¹⁰⁻¹¹और मैं अपने लोग इब्राएलियों के लिये एक स्थान चुनूँगा। मैं इब्राएलियों को इस प्रकार जमाऊँगा कि वे अपनी भूमि पर रह सकें। तब वे फिर कभी हटायें नहीं जा सकेंगे। अतीत में मैंने अपने इब्राएल के लोगों को मार्गदर्शन के लिये न्यायाधीशों को भेजा था और पापी व्यक्तियों ने उन्हें परेशान किया। अब वैसा नहीं होगा। मैं तुम्हें तुम्हारे सभी शत्रुओं से शान्ति दूँगा। मैं तुमसे यह भी कहता हूँ कि मैं तुम्हारे परिवार को राजाओं का परिवार बनाऊँगा।’

¹²‘तुम्हारी उम्र समाप्त होगी और तुम अपने पूर्वजों के साथ दफनाये जाओगे। उस समय मैं तुम्हारे पुत्रों में से एक को राजा बनाऊँगा। ¹³वह मेरे नाम पर मेरा एक गृह (मन्दिर) बनवायेगा। मैं उसके राज्य को सदा के लिये शक्तिशाली बनाऊँगा। ¹⁴मैं उसका पिता बनूँगा और वह मेरा पुत्र होगा। जब वह पाप करेगा, मैं उसे दण्ड देने के लिये अन्य लोगों का उपयोग करूँगा। उसे दंडित करने के लिये वे मेरे सचेतक होंगे। ¹⁵किन्तु मैं उससे प्रेम करना बन्द नहीं करूँगा। मैं उस पर कृपालु बना रहूँगा। मैंने अपने प्रेम और अपनी कृपा शाऊल से हटा ली। मैंने शाऊल को हटा दिया, जब मैं तुम्हारी ओर मुड़ा। मैं तुम्हारे परिवार के साथ वही नहीं करूँगा। ¹⁶तुम्हारे राजाओ का परिवार सदा चलता रहेगा तुम उस पर निर्भर रह सकते हो तुम्हारा राज्य तुम्हारे लिये सदा चलता रहेगा। तुम्हारा सिंहासन (राज्य) सदैव बना रहेगा।”

¹⁷नातान ने दाऊद को हर एक बात बताई। उसने दाऊद से हर एक बात कही जो उसने दर्शन में सुनी।

दाऊद परमेश्वर से प्रार्थना करता है

¹⁸तब राजा दाऊद भीतर गया और यहोवा के सामने बैठ गया। दाऊद ने कहा, “यहोवा, मेरे स्वामी,

तुम्हारे ... बनाऊँगा शाब्दिक “तुम्हारे लिये एक खानदान बनाऊँगा।

मैं तेरे लिये इतना महत्वपूर्ण क्यों हूँ? मेरा परिवार महत्वपूर्ण क्यों है? तूने मुझे महत्वपूर्ण क्यों बना दिया।¹⁹ मैं तेरे सेवक के अतिरिक्त और कुछ नहीं हूँ, और तू मुझ पर इतना अधिक कृपालु रहा है। किन्तु तूने ये कृपायें मेरे भविष्य के परिवार के लिये भी करने को कहा है। यहोवा मेरे स्वामी, तू सदा लोगों के लिये ऐसी ही बातें नहीं कहता, क्या तू कहता है? ²⁰ मैं तुझसे और अधिक, क्या कह सकता हूँ? यहोवा, मेरे स्वामी, तू जानता है कि मैं केवल तेरा सेवक हूँ। ²¹ तूने ये अद्भुत कार्य इसलिये किया है क्योंकि तूने कहा है कि तू इनको करेगा और क्योंकि यह कुछ ऐसा है जिसे तू करना चाहता है, और तूने निश्चय किया है कि मैं इन बड़े कार्यों को जानूँ। ²² हे यहोवा! मेरे स्वामी यही कारण है कि तू महान है। तेरे समान कोई नहीं है। तेरी तरह कोई देवता नहीं है। हम यह जानते हैं क्योंकि हम लोगों ने स्वयं यह सब सुना है। उन कार्यों के बारे में जो तूने किये।

²³ तेरे इज्राएल के लोगों की तरह पृथ्वी पर कोई राष्ट्र नहीं है। ये विशेष लोग हैं। वे दास थे। किन्तु तूने उन्हें मित्र से निकाला और उन्हें स्वतन्त्र किया। तूने उन्हें अपने लोग बनाया। तूने इज्राएलियों के लिये महान और अद्भुत काम किये। तूने अपने देश के लिये आश्चर्यजनक काम किये। ²⁴ तूने इज्राएल के लोगों को सदा के लिये अपने लोग बनाया, और यहोवा तू उनका परमेश्वर हुआ।

²⁵ यहोवा परमेश्वर, तूने अभी, मेरे बारे में बात की। मैं तेरा सेवक हूँ। तूने मेरे परिवार के बारे में भी बातें की। अपने वचनों को सदा सत्य कर जो तूने करने की प्रतिज्ञा की है। मेरे परिवार को राजाओं का परिवार हमेशा के लिये बना। ²⁶ तब तेरा नाम सदा सम्मानित रहेगा, और लोग कहेंगे, 'सर्वशक्तिमान यहोवा परमेश्वर इज्राएल पर शासन करता है और होने दे कि तेरे सेवक दाऊद का परिवार तेरे सामने सदा चलता रहे।'

²⁷ 'सर्वशक्तिमान यहोवा, इज्राएल के परमेश्वर, तूने मुझे बहुत कुछ दिखाया है। तूने कहा, 'मैं तुम्हारे परिवार को महान बनाऊँगा।' यही कारण है कि मैं तेरे सेवक ने, तेरे प्रति यह प्रार्थना करने का निश्चय किया। ²⁸ यहोवा मेरे स्वामी, तू परमेश्वर है और तेरे कथन सत्य होते हैं और तूने इस अपने सेवक के लिये, यह अच्छी चीज का वचन दिया है। ²⁹ कृपया मेरे परिवार को आशीष दे। हे यहोवा! हे स्वामी! जिससे वह तेरे सम्मुख सदैव बना रहे।

तूने ये ही वचन दिया था। अपने आशीर्वाद से मेरे परिवार को सदा के लिये आशीष दे।"

दाऊद अनेक युद्ध जीतता है

8 बाद में दाऊद ने पलिशतियों को हराया। उसने उनकी राजधानी पर अधिकार कर लिया। ² दाऊद ने मोआब के लोगों को भी हराया। उसने उन्हें भूमि पर लेटने को विवश किया। तब उसने एक रस्सी का उपयोग उन्हें नापने के लिये किया। जब दो व्यक्ति नाप लिये तब दाऊद ने उनको आदेश दिया कि वे मारे जायेंगे। किन्तु हर एक तीसरा व्यक्ति जीवित रहने दिया गया। मोआब के लोग दाऊद के सेवक बन गए। उन्होंने उसे राजस्व* दिया।

³ होब का पुत्र हददेजेर, सोबा का राजा था। दाऊद ने हददेजेर को उस समय पराजित किया जब उसने महानद के पास के क्षेत्र पर अधिकार करने का प्रयत्न किया। ⁴ दाऊद ने हददेजेर से सत्रह सौ घुड़सवार सैनिक लिये। उसने बीस हजार पैदल सैनिक भी लिये। दाऊद ने एक सौ के अतिरिक्त, सभी रथ के अश्वों को लंगड़ा कर दिया। उसने इन सौ अश्व रथों को बचा लिया।

⁵ दमिश्क से अरामी लोग सोबा के राजा हददेजेर की सहायता के लिये आए। किन्तु दाऊद ने उन बाईस हजार अरामियों को पराजित किया। ⁶ तब दाऊद ने दमिश्क के अराम में सेना की टुकड़ियाँ रखी। अरामी दाऊद के सेवक बन गए और राजस्व लाए। यहोवा ने दाऊद को, जहाँ कहीं वह गया विजय दी।

⁷ दाऊद ने उन सोने की ढालों को लिया जो हददेजेर के सैनिकों की थीं। दाऊद ने इन ढालों को लिया और उनको यरूशलेम लाया। ⁸ दाऊद ने तांबे की बनी बहुत सी चीजें बेतह और बरौते से भी लीं। (बेतह और बरौते दोनों नगर हददेजेर के थे।)

⁹ हमात के राजा तोई ने सुना कि दाऊद ने हददेजेर की पूरी सेना को पराजित कर दिया। ¹⁰ तब तोई ने अपने पुत्र योराम को दाऊद के पास भेजा। योराम ने दाऊद का अभिवादन किया और आशीर्वाद दिया क्योंकि दाऊद ने हददेजेर के विरुद्ध युद्ध किया और उसे पराजित किया था। (हददेजेर ने, तोई से, पहले युद्ध किये थे।) योराम चाँदी, सोने और ताँबे की बनी चीजें लाया। ¹¹ दाऊद ने इन

राजस्व पराजित करने वाले राजा को लोग जो धन देते हैं।

चीजों को लिया और यहोवा को समर्पित* कर दिया। उसने उसे अन्य सोने-चाँदी के साथ रखा जिसे उसने पराजित राष्ट्रों से लेकर यहोवा को समर्पित किया था।¹²ये राष्ट्र अराम, मोआब, अम्मोन, पलिशती और अमालेक थे। दाऊद ने सोबा के राजा रेहोब के पुत्र हददेजेर को भी पराजित किया।

¹³दाऊद ने अट्टारह हजार अरामियों को नमक की घाटी में पराजित किया। वह उस समय प्रसिद्ध था जब वह घर लौटा।¹⁴दाऊद ने एदोम में सेना की टुकड़ियाँ रखी। उसने इन सैनिकों की टुकड़ियों को एदोम के पूरे देश में रखा। एदोम के सभी लोग दाऊद के सेवक हो गए। जहाँ कहीं दाऊद गया यहोवा ने उसे विजय दी।

दाऊद का शासन

¹⁵दाऊद ने सारे इज्राएल पर शासन किया। दाऊद के निर्णय सभी लोगों के लिये महत्वपूर्ण और उचित होते थे।¹⁶सरूयाह का पुत्र योआब सेना का सेनापति था। अहीलूद का पुत्र इतिहासकार था।¹⁷अहीतूब का पुत्र सादोक और एब्यातर का पुत्र अहीमेलेक दोनों याजक थे। सरयाह सचिव था।¹⁸यहोयादा का पुत्र बनायाह करेतियों और पलेतियों* का शासक था, और दाऊद के पुत्र महत्वपूर्ण प्रमुख* थे।

दाऊद शाऊल के परिवार पर कृपालु है

9 दाऊद ने पूछा, “क्या शाऊल के परिवार में अब तक कोई बचा है? मैं योनातन के कारण उस व्यक्ति पर दया करना चाहता हूँ।”

²शाऊल के परिवार से एक सेवक सीबा नाम का था। दाऊद के सेवकों ने सीबा को दाऊद के पास बुलाया। राजा दाऊद ने पूछा, “क्या तुम सीबा हो?”

सीबा ने कहा, “हाँ मैं सीबा, आपका सेवक हूँ।”

³राजा ने पूछा, “क्या शाऊल के परिवार में कोई बचा है? मैं उस व्यक्ति पर परमेश्वर की कृपा दिखाना चाहता हूँ।”

सीबा ने राजा दाऊद से कहा, “योनातन का एक पुत्र अभी तक जीवित है? वह दोनों पैरों से लंगड़ा है।”

समर्पित विशेष उपयोग के लिये देना।

करेतियों और पलेतियों ये दाऊद के विशेष अंगरक्षक थे। एक प्राचीन अर्मेई अनुवाद में “धनुर्धर और पत्थर फेंक है। **प्रमुख** शाब्दिक “याजक”।

⁴राजा ने सीबा से कहा, “यह पुत्र कहाँ है?”

सीबा ने राजा से कहा, “वह लो-दोबार में अम्मीएल के पुत्र माकीर के घरन में है।”

⁵दाऊद ने अपने सेवकों को लो-दोबार के अम्मीएल के पुत्र माकीर के घर से योनातन के पुत्र को लाने को कहा।⁶योनातन का पुत्र मेपीबोशेत दाऊद के पास आया और अपना सिर भूमि तक झुकाया। दाऊद ने कहा, “मेपीबोशेत।”

मेपीबोशेत ने कहा, मैं आपका सेवक हूँ।”

⁷दाऊद ने मेपीबोशेत से कहा, “डरो नहीं। मैं तुम्हारे प्रति दयालु रहूँगा। मैं यह तुम्हारे पिता योनातन के लिये करूँगा। मैं तुम्हारे पितामह शाऊल की सारी भूमि तुमको दूँगा, और तुम सदा मेरी मेज पर भोजन कर सकोगे।”

⁸मेपीबोशेत दाऊद के सामने फिर झुका। मेपीबोशेत ने कहा, “आप अपने सेवक पर बहुत कृपालु रहे हैं और मैं एक मृत कुत्ते से अधिक अच्छा नहीं हूँ।”

⁹तब राजा दाऊद ने शाऊल के सेवक सीबा को बुलाया। दाऊद ने सीबा से कहा, “मैंने शाऊल के परिवार और जो कुछ उसका है उसे तुम्हारे स्वामी के पौत्र (मेपीबोशेत) को दे दिया है।¹⁰तुम मेपीबोशेत के लिये भूमि पर खेती करोगे। तुम्हारे पुत्र और सेवक मेपीबोशेत के लिये यह करेंगे। तुम फसल काटोगे। तब तुम्हारे स्वामी का पौत्र (मेपीबोशेत) खाने के लिये भोजन पाएगा। किन्तु मेपीबोशेत तुम्हारे स्वामी का पौत्र मेरी मेज पर खाने का सदा अधिकारी होगा।”

सीबा के पन्द्रह पुत्र और बीस सेवक थे।¹¹सीबा ने राजा दाऊद से कहा, “मैं आपका सेवक हूँ। मैं वह सब कुछ करूँगा, जो मेरे स्वामी, मेरे राजा आदेश देंगे।”

अतः मेपीबोशेत ने दाऊद की मेज पर राजा के पुत्रों में से एक की तरह भोजन किया।¹²मेपीबोशेत का एक छोटा पुत्र मीका नाम का था। सीबा परिवार के सभी लोग मेपीबोशेत के सेवक हो गए।¹³मेपीबोशेत दोनों पैरों से लंगड़ा था। मेपीबोशेत यरूशलेम में रहता था। हर एक दिन मेपीबोशेत राजा की मेज पर भोजन करता था।

हानून दाऊद के व्यक्तियों को लज्जित करता है

10 बाद में, अम्मोनियों का राजा नाहाश मरा। उसके बाद उसका पुत्र हानून राजा हुआ।²दाऊद ने कहा, “नाहाश मेरे प्रति कृपालु रहा। इसलिये मैं उसके

पुत्र हानून के प्रति कृपालु रहूँगा।” इसलिये दाऊद ने हानून को उसके पिता की मृत्यु पर सांत्वना देने के लिये अपने अधिकारियों को भेजा। अतः दाऊद के सेवक अम्मोनियों के देश में गये।³ किन्तु अम्मोनी प्रमुखों ने अपने स्वामी हानून से कहा, “क्या आप समझते हैं कि दाऊद कुछ व्यक्तियों को आपके पास सांत्वना देने के लिये भेजकर आपके पिता को सम्मान देने का प्रयत्न कर रहा है? नहीं! दाऊद ने इन व्यक्तियों को आपके नगर के बारे में गुप्त रूप से जानने और समझने के लिये भेजा है। वे आपके विरुद्ध युद्ध की योजना बना रहे हैं।”

⁴इसलिये हानून ने दाऊद के सेवकों को पकड़ा और उनकी आधी दाढ़ी कटवा दी। उसने उनके वस्त्रों को बीच से कमर के नीचे तक कटवा दिया। तब उसने उन्हें भेज दिया।

⁵जब लोगों ने दाऊद से कहा, तो उसने अपने अधिकारियों से मिलने के लिये दूतों को भेजा। उसने यह इसलिये किया क्योंकि वे लोग बहुत लज्जित थे। राजा दाऊद ने कहा, “जब तक तुम्हारी दाढ़ियाँ फिर से न बढ़ें तब तक यरीहो में ठहरो। तब यरूशलेम लौट आओ।”

अम्मोनियों के विरुद्ध युद्ध

⁶अम्मोनियों ने समझ लिया कि वे दाऊद के शत्रु हो गये। इसलिये उन्होंने अरामी को बेतुहोब और सोबा से पारिश्रमिक पर बुलाया। वहाँ बीस हजार अरामी पैदल-सैनिक आए थे। अम्मोनियों ने तोब से बारह हजार सैनिकों और माका के राजा को एक हजार सैनिकों के साथ पारिश्रमिक पर बुलाया।

⁷दाऊद ने इस विषय में सुना। इसलिये उसने योआब और शक्तिशाली व्यक्तियों की सारी सेना भेजी।⁸ अम्मोनी बाहर निकले और युद्ध के लिये तैयार हुए। वे नगर द्वार पर खड़े हुए। योआब और रहोब के अरामी तथा तोब और माका के व्यक्ति स्वयं खुले मैदान में नहीं खड़े हुये।

⁹योआब ने देखा कि अम्मोनी उसके विरुद्ध सामने और पीछे दोनों ओर खड़े हैं। इसलिये उसने इज़्राएलियों में से कुछ उत्तम योद्धाओं को चुना। योआब ने इन उत्तम सैनिकों को अरामियों के विरुद्ध लड़ने को तैयार किया।¹⁰ तब योआब ने अन्य लोगों को अपने भाई अबीशै के नेतृत्व में अम्मोनी के विरुद्ध भेजा।¹¹ योआब ने अबीशै से कहा, “यदि अरामी हमसे अधिक शक्तिशाली हों तो तुम मेरी

सहायता करना। यदि अम्मोनी तुमसे अधिक शक्तिशाली होगी तो मैं आकर तुम्हें सहायता दूँगा।¹² वीर बनो, और हम अपने लोगों और अपने परमेश्वर के नगर के लिये वीरता से युद्ध करेंगे। यहोवा वही करेगा जिसे वह ठीक मानता है।”

¹³तब योआब और उसके सैनिकों ने अरामियों पर आक्रमण किया। अरामी योआब और उसके सैनिकों के सामने भाग खड़े हुए।¹⁴ अम्मोनियों ने देखा कि अरामी भाग रहे हैं, इसलिये वे अबीशै के सामने से भाग खड़े हुए और अपने नगर में लौट गए।

इस प्रकार योआब अम्मोनियों के साथ युद्ध से लौटा और यरूशलेम वापस आया।

अरामी फिर लड़ने का निश्चय करते हैं

¹⁵अरामियों ने देखा कि इज़्राएलियों ने उन्हें हरा दिया। इसलिये वे एक विशाल सेना के रूप में इकट्ठे हुए।¹⁶ हददेजेर ने परात नदी की दूसरी ओर रहने वाले अरामियों को लाने के लिये दूत भेजे। ये अरामी हेलांम पहुँचे। उनका संचालक शोबक था, जो हददेजेर की सेना का सेनापति था।

¹⁷दाऊद को इसका पता लगा। इसलिये उसने सारे इज़्राएलियों को एक साथ इकट्ठा किया उन्होंने यरदन नदी को पार किया और वे हेलांम पहुँचे।

वहाँ अरामियों ने आक्रमण की तैयारी की और धावा बोल दिया।¹⁸ किन्तु दाऊद ने अरामियों को पराजित किया और वे इज़्राएलियों के सामने भाग खड़े हुए। दाऊद ने बहुत से अरामियों को मार डाला। सात सौ सारथी तथा चालीस हजार घुड़सवार दाऊद ने अरामी सेना के सेनापति शोबक को भी मार डाला।

¹⁹जो राजा, हददेजेर की सेवा कर रहे थे उन्होंने देखा कि इज़्राएलियों ने उनको हरा दिया। इसलिये उन्होंने इज़्राएलियों से सन्धि की और उनकी सेवा करने लगे। अरामी अम्मोनियों को फिर सहायता देने से भयभीत रहने लगे।

दाऊद बतशेबा से मिलता है

11 बसन्त में, जब राजा युद्ध पर निकलते हैं, दाऊद ने योआब, उसके अधिकारियों और सभी इज़्राएलियों को अम्मोनियों को नष्ट करने के लिये

भेजा। योआब की सेना ने रब्बा (राजधानी) पर भी आक्रमण किया।

किन्तु दाऊद यरूशलेम में रुका। ²शाम को वह अपने बिस्तर से उठा। वह राजमहल की छत पर चारों ओर घूमा। जब दाऊद छत पर था, उसने एक स्त्री को नहाते देखा। स्त्री बहुत सुन्दर थी। ³इसलिये दाऊद ने अपने सेवकों को बुलाया और उनसे पूछा कि वह स्त्री कौन थी? एक सेवक ने उत्तर दिया, “वह स्त्री एलीआम की पुत्री बतशेबा है। वह हिती ऊरिय्याह की पत्नी है।”

⁴दाऊद ने बतशेबा को अपने पास बुलाने के लिये दूत भेजे। जब वह दाऊद के पास आई तो उसने उसके साथ शारीरिक सम्बन्ध किया। उसने स्नान किया और वह अपने घर चली गई। ⁵किन्तु बतशेबा गर्भवती हो गई। उसने दाऊद को सूचना भेजी। उसने उससे कहा, “मैं गर्भवती हूँ।”

दाऊद अपने पाप को छिपाना चाहता है

“दाऊद ने योआब को सन्देश भेजा, “हिती ऊरिय्याह को मेरे पास भेजो।”

इसलिये योआब ने ऊरिय्याह को दाऊद के पास भेजा। ⁷ऊरिय्याह दाऊद के पास आया। दाऊद ने ऊरिय्याह से बात की। दाऊद ने ऊरिय्याह से पूछा कि योआब कैसा है, सैनिक कैसे हैं और युद्ध कैसे चल रहा है। ⁸तब दाऊद ने ऊरिय्याह से कहा, “घर जाओ और आराम करो।” *

ऊरिय्याह ने राजा का महल छोड़ा। राजा ने ऊरिय्याह को एक भेंट भी भेजी। ⁹किन्तु ऊरिय्याह अपने घर नहीं गया। ऊरिय्याह राजा के महल के बाहर द्वार पर सोया। वह उसी प्रकार सोया जैसे राजा के अन्य सेवक सोये। ¹⁰सेवकों ने दाऊद से कहा, “ऊरिय्याह अपने घर नहीं गया।”

तब दाऊद ने ऊरिय्याह से कहा, “तुम लम्बी यात्रा से आए। तुम घर क्यों नहीं गए?”

¹¹ऊरिय्याह ने दाऊद से कहा, “पवित्र सन्दूक तथा झ्रपाएल और यहूदा के सैनिक डेरों में ठहरे हैं। मेरे स्वामी योआब और मेरे स्वामी (दाऊद) के सेवक बाहर मैदानों में खेमा डाले पड़े हैं। इसलिये यह अच्छा नहीं कि मैं घर जाऊँ, खाऊँ, पीऊँ, और अपनी पत्नी के साथ सोऊँ।”

आराम करो शाब्दिक “अपना पैर धोओ।”

¹²दाऊद ने ऊरिय्याह से कहा, “आज यहीं ठहरो। कल मैं तुम्हें युद्ध में वापस भेजूँगा।”

ऊरिय्याह उस दिन यरूशलेम में ठहरा। वह अगली सुबह तक रुका। ¹³तब दाऊद ने उसे आने और खाने के लिये बुलाया। ऊरिय्याह ने दाऊद के साथ पीया और खाया। दाऊद ने उरिय्याह को नशे में कर दिया। किन्तु ऊरिय्याह, फिर भी घर नहीं गया। उस शाम को ऊरिय्याह राजा के सेवकों के साथ राजा के द्वार के बाहर सोया।

दाऊद ऊरिय्याह की मृत्यु की योजना बनाता है

¹⁴अगले प्रातःकाल, दाऊद ने योआब के लिये एक पत्र लिखा। दाऊद ने ऊरिय्याह को वह पत्र ले जाने को दिया। ¹⁵पत्र में दाऊद ने लिखा: “ऊरिय्याह को अग्रिम पंक्ति में रखो जहाँ युद्ध भयंकर हो। तब उसे अकेले छोड़ दो और उसे युद्ध में मारे जाने दो।”

¹⁶योआब ने नगर के घेरे बन्दी के समय यह देखा कि सबसे अधिक वीर अम्मोनी योद्धा कहाँ हैं। उसने ऊरिय्याह को उस स्थान पर जाने के लिये चुना। ¹⁷नगर (रब्बा) के आदमी योआब के विरुद्ध लड़ने को आये। दाऊद के कुछ सैनिक मारे गये। हिती ऊरिय्याह उन लोगों में से एक था।

¹⁸तब योआब ने दाऊद को युद्ध में जो हुआ, उसकी सूचना भेजी। ¹⁹योआब ने दूत से कहा कि वह राजा दाऊद से कहे कि युद्ध में क्या हुआ। ²⁰“सम्भव है कि राजा क्रुद्ध हो। संभव है कि राजा पूछे, ‘योआब की सेना नगर के पास लड़ने क्यों गई? क्या तुम्हें मालूम नहीं कि लोग नगर के प्राचीर से भी बाण चला सकते हैं?’ ²¹क्या तुम नहीं जानते कि यरूब्बेशेत के पुत्र अबीमेलक को किसने मारा? वहाँ एक स्त्री नगर-दीवार पर थी जिसने अबीमेलक के ऊपर चक्की का ऊपरी पाट फेंका। उस स्त्री ने उसे तेबेस में मारा डाला। तुम दीवार के निकट क्यों गये?’ (यदि राजा दाऊद यह पूछता है) तो तुम्हें उत्तर देना चाहिये। आपका सेवक हिती ऊरिय्याह भी मर गया।”

²²दूत गया और उसने दाऊद को वह सब बताया जो उसे योआब ने कहने को कहा था। ²³दूत ने दाऊद से कहा, “अम्मोन के लोग जीत रहे थे वे बाहर आये तथा उन्होंने खुले मैदान में हम पर आक्रमण किया। किन्तु हम लोग उनसे नगर-द्वार पर लड़े। ²⁴नगर दीवार के सैनिकों ने आपके सेवकों पर बाण चलाये। आपके कुछ सेवक मारे गए। आपका सेवक हिती ऊरिय्याह भी मारा गया।”

²⁵दाऊद ने दूत से कहा, “तुम्हें योआब से यह कहना है: ‘इस परिणाम से परेशान न हो। हर युद्ध में कुछ लोग मारे जाते हैं यह किसी को नहीं मालूम कि कौन मारा जायेगा। रब्बा नगर पर भीषण आक्रमण करो। तब तुम उस नगर को नष्ट करोगे।’ योआब को इन शब्दों से प्रोत्साहित करो।”

दाऊद बतशेबा से विवाह करता है

²⁶बतशेबा ने सुना कि उसका पति ऊररियाह मर गया। तब वह अपने पति के लिये रोई। ²⁷जब उसने शोक का समय पूरा कर लिया, तब दाऊद ने उसे अपने घर में लाने के लिये सेवकों को भेजा। वह दाऊद की पत्नी हो गई, और उसने दाऊद के लिये एक पुत्र उत्पन्न किया। दाऊद ने जो बुरा काम किया यहोवा ने उसे पसन्द नहीं किया।

नातान दाऊद से बात करता है

12 यहोवा ने नातान को दाऊद के पास भेजा। नातान दाऊद के पास गया। नातान ने कहा, “नगर में दो व्यक्ति थे। एक व्यक्ति धनी था। किन्तु दूसरा गरीब था। ²धनी आदमी के पास बहुत अधिक भेड़ें और पशु थे। ³किन्तु गरीब आदमी के पास, एक छोटे मादा मेमने के अतिरिक्त जिसे उसने खरीदा था, कुछ न था। गरीब आदमी उस मेमने को खिलाता था। यह मेमना उस गरीब आदमी के भोजन में से खाता था और उसके प्याले में से पानी पीता था। मेमना गरीब आदमी की छाती से लग कर सोता था। मेमना उस व्यक्ति की पुत्री के समान था।

⁴“तब एक यात्री धनी व्यक्ति से मिलने के लिये वहाँ आया। धनी व्यक्ति यात्री को भोजन देना चाहता था। किन्तु धनी व्यक्ति अपनी भेड़ या अपने पशुओं में से किसी को यात्री को खिलाने के लिये नहीं लेना चाहता था। उस धनी व्यक्ति ने उस गरीब से उसका मेमना ले लिया। धनी व्यक्ति ने उसके मेमने को मार डाला और अपने अतिथि के लिये उसे पकाया।”

⁵दाऊद धनी आदमी पर बहुत क्रोधित हुआ। उसने नातान से कहा, “यहोवा शाश्वत है, निश्चय जिस व्यक्ति ने यह किया वह मरेगा। ⁶उसे मेमने की चौगुनी कीमत चुकानी पड़ेगी क्योंकि उसने यह भयानक कार्य किया और उसमें दया नहीं थी।”

नातान, दाऊद को उसके पाप के बारे में बताता है

⁷तब नातान ने दाऊद से कहा, “तुम वो धनी पुरुष हो! यहोवा इब्राएल का परमेश्वर यह कहता है: ‘मैंने तुम्हारा अभिषेक इब्राएल के राजा के रूप में किया। मैंने तुम्हें शाऊल से बचाया। ⁸मैंने उसका परिवार और उसकी पत्नियाँ तुम्हें लेने दीं, और मैंने तुम्हें इब्राएल और यहूदा का राजा बनाया। जैसे वह पर्याप्त नहीं हो, मैंने तुम्हें अधिक से अधिक दिया। ⁹फिर तुमने यहोवा के आदेश की उपेक्षा क्यों की? तुमने वह क्यों किया जिसे वह पाप कहता है। तुमने हिती ऊररियाह को तलवार से मारा और तुमने उसकी पत्नी को अपनी पत्नी बनाने के लिये लिया। हाँ, तुमने ऊररियाह को अम्मोनियों की तलवार से मार डाला। ¹⁰इसलिये सदैव तुम्हारे परिवार में कुछ लोग ऐसे होंगे जो तलवार से मारे जायेंगे। तुमने ऊररियाह हिती की पत्नी ली। इस प्रकार तुमने यह प्रकट किया कि तुम मेरी परवाह नहीं करते।’

¹¹“यही है जो यहोवा कहता है: ‘मैं तुम्हारे विरुद्ध आपत्तियाँ ला रहा हूँ। यह आपत्ति तुम्हारे अपने परिवार से आएगी। मैं तुम्हारी पत्नियों को ले लूँगा और उसे दूँगा जो तुम्हारे बहुत अधिक समीप है। यह व्यक्ति तुम्हारी पत्नियों के साथ सोएगा और इसे हर एक जानेगा। ¹²तुम बतशेबा के साथ गुप्त रूप में सोये। किन्तु मैं यह करूँगा जिससे इब्राएल के सारे लोग इसे देख सकें।”

¹³तब दाऊद ने नातान से कहा, “मैंने यहोवा के विरुद्ध पाप किया है।”

नातान ने दाऊद से कहा, “यहोवा तुम्हें क्षमा कर देगा, यहाँ तक की इस पाप के लिये भी तुम मरोगे नहीं। ¹⁴किन्तु इस पाप को जो तुमने किया है उससे यहोवा के शत्रुओं ने यहोवा का सम्मान करना छोड़ दिया है। अतः इस कारण जो तुम्हारा पुत्र उत्पन्न हुआ है, मर जाएगा।”

दाऊद और बतशेबा का बच्चा मर जाता है

¹⁵तब नातान अपने घर गया और यहोवा ने दाऊद और ऊररियाह की पत्नी से जो पुत्र उत्पन्न हुआ था उसे बहुत बीमार कर दिया। ¹⁶दाऊद ने बच्चे के लिये परमेश्वर से प्रार्थना की। दाऊद ने खाना-पीना बन्द कर दिया। वह अपने घर में गया और उसमें ठहरा रहा। वह रातभर भूमि पर लेटा रहा।

¹⁷दाऊद के परिवार के प्रमुख आये और उन्होंने उसे भूमि से उठाने का प्रयत्न किया। किन्तु दाऊद ने उठना अस्वीकार किया। उसने इन प्रमुखों के साथ खाना खाने से भी इन्कार कर दिया।

¹⁸सातवें दिन बच्चा मर गया। दाऊद के सेवक दाऊद से यह कहने से डरते थे कि बच्चा मर गया। उन्होंने कहा, “देखो, हम लोगों ने दाऊद से उस समय बात करने का प्रयत्न किया जब बच्चा जीवित था। किन्तु उसने हम लोगों की बात सुनने से इन्कार कर दिया। यदि हम दाऊद से कहेंगे कि बच्चा मर गया तो हो सकता है वह अपने को कुछ हानि कर लो।”

¹⁹किन्तु दाऊद ने अपने सेवकों को कानाफूसी करते देखा। तब उसने समझ लिया कि बच्चा मर गया। इसलिये दाऊद ने अपने सेवकों से पूछा, “क्या बच्चा मर गया?”

सेवको ने उत्तर दिया, “हाँ वह मर गया।”

²⁰दाऊद फर्श से उठा। वह नहाया। उसने अपने वस्त्र बदले और तैयार हुआ। तब वह यहोवा के गृह में उपासना करने गया। तब वह घर गया और कुछ खाने को माँगा। उसके सेवकों ने उसे कुछ खाना दिया और उसने खाया।

²¹दाऊद के नौकरों ने उससे कहा, “आप यह क्यों कर रहे हैं? जब बच्चा जीवित था तब आपने खाने से इन्कार किया। आप रोये। किन्तु जब बच्चा मर गया तब आप उठे और आपने भोजन किया।”

²²दाऊद ने कहा, “जब बच्चा जीवित रहा, मैंने भोजन करना अस्वीकार किया, और मैं रोया क्योंकि मैंने सोचा, ‘कौन जानता है, संभव है यहोवा मेरे लिये दुःखी हों और बच्चे को जीवित रहने दें।’ ²³किन्तु अब बच्चा मर गया। इसलिये मैं अब खाने से क्यों इन्कार करूँ? क्या मैं बच्चे को फिर जीवित कर सकता हूँ? नहीं! किसी दिन मैं उसके पास जाऊँगा, किन्तु वह मेरे पास लौटकर नहीं आ सकता।”

सुलैमान उत्पन्न होता है

²⁴तब दाऊद ने अपनी पत्नी बतशेबा को सान्त्वना दी। वह उसके साथ सोया और उसके साथ शारीरिक सम्बन्ध किया। बतशेबा फिर गर्भवती हुई। उसका दूसरा पुत्र हुआ। दाऊद ने उस लड़के का नाम सुलैमान रखा। यहोवा सुलैमान से प्रेम करता था। ²⁵यहोवा ने नबी नातान

द्वारा सन्देश भेजा। नातान ने सुलैमान का नाम यदीद्याह* रखा। नातान ने यह यहोवा के लिये किया।

दाऊद रब्बा पर अधिकार करता है

²⁶रब्बा नगर अम्मोनियों का राजधानी था। योआब रब्बा के विरुद्ध में लड़ा। उसने नगर को ले लिया। ²⁷योआब ने दाऊद के पास दूत भेजा और कहा, “मैंने रब्बा के विरुद्ध युद्ध किया है। मैंने जल के नगर को जीत लिया है। ²⁸अब अन्य लोगों को साथ लायें और इस नगर (रब्बा) पर आक्रमण करें। इस नगर पर अधिकार कर लो, इसके पहले की मैं इस पर अधिकार करूँ। यदि इस नगर पर मैं अधिकार करता हूँ तो उस नगर का नाम मेरे नाम पर होगा।”

²⁹तब दाऊद ने सभी लोगों को इकट्ठा किया और रब्बा को गया। वह रब्बा के विरुद्ध लड़ा और नगर पर उसने अधिकार कर लिया। ³⁰दाऊद ने उनके राजा के सिर से मुकुट उतार दिया।* मुकुट सोने का था और वह तौल में लगभग पचहत्तर पौंड था। इस मुकुट में बहुमूल्य रत्न थे। उन्होंने मुकुट को दाऊद के सिर पर रखा। दाऊद नगर से बहुत सी कीमती चीजें ले गया।

³¹दाऊद रब्बा नगर से भी लोगों को बाहर लाया। दाऊद ने उन्हें आरे, लोहे की गैती और कुल्हाड़ियों से काम करवाया। उसने उन्हें ईंटों से निर्माण करने के लिये भी विवश किया। दाऊद ने वही व्यवहार सभी अम्मोनी नगरों के साथ किया। तब दाऊद और उसकी सारी सेना यरूशलैम लौट गई।

अम्मोन और तामार

13 दाऊद का एक पुत्र अबशालोम था। अबशालोम की बहन का नाम तामार था। तामार बहुत सुन्दर थी। दाऊद के अन्य पुत्रों में से एक पुत्र अम्मोन था ²जो तामार से प्रेम करता था। तामार कुवैरी थी। अम्मोन उसके साथ कुछ बुरा करने को नहीं सोचता था। लेकिन अम्मोन उस बहुत चाहता था। अम्मोन उस के बाहे में इतना सोचन लगा कि वह बिमार हो गया।

यदीद्याह इस नाम का अर्थ “प्रभु का प्रिय” है।

दाऊद ... उतार दिया या “मिल्कम के सिर से” मिल्कम एक असत्य देवता था, जिसकी पूजा अम्मोनी लोग करते थे।

³अम्नोन का एक मित्र शिमा का पुत्र योनादाब था। (शिमा दाऊद का भाई था।) योनादाब बहुत चालाक आदमी था। ⁴योनादाब ने अम्नोन से कहा, “हर दिन तुम दुबले-दुबले से दिखाई पड़ते हो! ‘तुम राजा के पुत्र हो! तुम्हें खाने के लिये बहुत अधिक है, तो भी तुम अपना वजन क्यों खोते जा रहे हो? मुझे बताओ!”

अम्नोन ने योनादाब से कहा, “मैं तामार से प्रेम करता हूँ। किन्तु वह मेरे सौतेले भाई अबशालोम की बहन है।”

⁵योनादाब ने अम्नोन से कहा, “बिस्तर में लेट जाओ। ऐसा व्यवहार करो कि तुम बीमार हो। तब तुम्हारे पिता तुमको देखने आएँगे। उनसे कहो, ‘कृपया मेरी बहन तामार को आने दें और मुझे खाना देने दें। उसे मेरे सामने भोजन बनाने दें। तब मैं उसे देखूँगा और उसके हाथ से खाऊँगा।”

“इसलिये अम्नोन बिस्तर में लेट गया, और ऐसा व्यवहार किया मानों वह बीमार हो। राजा दाऊद अम्नोन को देखने आया। अम्नोन ने राजा दाऊद से कहा, “कृपया मेरी बहन तामार को यहाँ आने दें। मेरे देखते हुए उसे मेरे लिये दो रोटी बनाने दें। तब मैं उसके हाथों से खा सकता हूँ।”

⁷दाऊद ने तामार के घर सन्देशवाहको को भेजा। संदेशवाहकों ने तामार से कहा, “अपने भाई अम्नोन के घर जाओ और उसके लिये कुछ भोजन पकाओ।”

तामार अम्नोन के लिये भोजन बनाती है

⁸अतः तामार अपने भाई अम्नोन के घर गई। अम्नोन बिस्तर में था। तामार ने कुछ गूंधा आटा लिया और इसे अपने हाथों से एक साथ दबाया। उसने अम्नोन के देखते हुये कुछ रोटियाँ बनाईं। तब उसने रोटियों को पकाया। ⁹जब तामार ने रोटियाँ को पकाना पूरा किया तो उसने कढ़ाही में से रोटियों को अम्नोन के लिये निकाला। किन्तु अम्नोन ने खाना अस्वीकार किया।

अम्नोन ने अपने सेवकों से कहा, “तुम सभी लोग चले जाओ। मुझे अकला रहते दो!” इसलिये सभी सेवक अम्नोन के कमरे से बाहर चले गए।

¹⁰अम्नोन ने तामार से कहा, “भोजन भीतर वाले कमरे में ले चलो। तब मैं तुम्हारे हाथ से खाऊँगा।”

अम्नोन तामार के साथ कुकर्म करता है

तामार अपने भाई के पास भीतर वाले कमरे में गई। वह उन रोटियों को लाई जो उसने बनाए थे। ¹¹वह

अम्नोन के पास गई जिससे वह उसके हाथों से खा सके। किन्तु अम्नोन ने तामार को पकड़ लिया। उसने उससे कहा, “बहन, आओ, और मेरे साथ सोओ।”

¹²तामार ने अम्नोन से कहा, “नहीं, भाई! मुझे मजबूर न करो! यह इज़्राएल में कभी नहीं किया जा सकता। यह लज्जाजनक काम न करो। ¹³मैं इस लज्जा से कभी उबर नहीं सकती! तुम उन मूर्ख इज़्राएलियों की तरह मत बनो कृपया राजा से बात करो। वह तुम्हें मेरे साथ विवाह करने देगा।”

¹⁴किन्तु अम्नोन ने तामार की एक न सुनी। वह तामार से अधिक शक्तिशाली था। उसने उसे शारीरिक सम्बन्ध करने के लिये विवश किया। ¹⁵उसके बाद अम्नोन तामार से घृणा करने लगा। अम्नोन ने उसके साथ उससे भी अधिक घृणा की जितना वह पहले प्रेम करता था। अम्नोन ने तामार से कहा, “उठो और चली जाओ!”

¹⁶तामार ने अम्नोन से कहा, “अब मुझे अपने से दूर कर, तुम पहले से भी बड़ा पाप करने जा रहे हो।”

किन्तु अम्नोन ने तामार की एक न सुनी। ¹⁷अम्नोन ने अपने युवक सेवक से कहा, “इस लड़की को इस कमरे से अभी बाहर निकालो। उसके जाने पर दरवाजे में ताला लगा दो।”

¹⁸अतः अम्नोन का सेवक तामार को कमरे के बाहर ले गया और उसके जाने पर ताला लगा दिया।

तामार ने कई रंग* का लबादा पहन रखा था। राजा की कुवॉरी कन्यायें ऐसा ही लबादा पहनती थीं। ¹⁹तामार ने राख ली और अपने सिर पर डाल लिया। उसने अपने बहुरंगे लबादे को फाड़ डाला। उसने अपना हाथ अपने सिर पर रख लिया और वह जोर से रोने लगी।

²⁰तामार के भाई अबशालोम ने तामार से कहा, “तो क्या तुम्हारे भाई अम्नोन ने तुम्हारे साथ सोया। अम्नोन तुम्हारा भाई है। बहन, अब शान्त रहो। इससे तुम बहुत परेशान न हो।” अतः तामार ने कुछ भी नहीं कहा। वह अबशालोम के घर रहने चली गई *

²¹राजा दाऊद को इसकी सूचना मिली। वह बहुत क्रोधित हुआ। ²²अबशालोम अम्नोन से घृणा करता था। अबशालोम ने अच्छा या बुरा अम्नोन से कुछ नहीं कहा।

कई रंग या “पट्टीदार।”

वह ... गई या “तामार एक बरबाद स्त्री जो अपने भाई अबशालोम के घर रहती थी।”

वह अम्नोन से घृणा करता था क्योंकि अम्नोन ने उसकी बहन के साथ कुकर्म किया था।

अबशालोम का बदला

²³दो वर्ष बाद कुछ व्यक्ति एप्रैम के पास बालहासोर में अबशालोम की भेड़ों का ऊन काटने आये। अबशालोम ने राजा के सभी पुत्रों को आने और देखने के लिये आमन्त्रित किया। ²⁴अबशालोम राजा के पास गया और उससे कहा, “मेरे पास कुछ व्यक्ति मेरी भेड़ों से ऊन काटने आ रहे हैं। कृपया अपने सेवकों के साथ आएँ और देखें।”

²⁵राजा दाऊद ने अबशालोम से कहा, “पुत्र नहीं। हम सभी नहीं जाएँगे। इससे तुम्हें परेशानी होगी।” अबशालोम ने दाऊद से चलने की प्रार्थना की। दाऊद नहीं गया, किन्तु उसने आशीर्वाद दिया।

²⁶अबशालोम ने कहा, “यदि आप जाना नहीं चाहते तो, कृपाकर मेरे भाई अम्नोन को मेरे साथ जाने दें।” राजा दाऊद ने अबशालोम से पूछा, “वह तुम्हारे साथ क्यों जाये?”

²⁷अबशालोम दाऊद से प्रार्थना करता रहा। अन्त में दाऊद ने अम्नोन और सभी राजपुत्रों को अबशालोम के साथ जाने दिया।

अम्नोन की हत्या की गई

²⁸तब अबशालोम ने अपने सेवकों को आदेश दिया। उसने उनसे कहा, “अम्नोन पर नजर रखो। जब वह नशे में धुत होगा तब मैं तुम्हें आदेश दूँगा अम्नोन को जान से मार डालो। सजा पाने से डरो नहीं। आखिकार, तुम मेरे आदेश का पालन करोगे। अब शक्तिशाली और वीर बनो।”

²⁹अबशालोम के युवकों ने अबशालोम के आदेश के अनुसार अम्नोन को मार डाला। किन्तु दाऊद के अन्य पुत्र बच निकले। हर एक पुत्र अपने खच्चर पर बैठा और भाग गया।

दाऊद अम्नोन की मृत्यु की सूचना पाता है

³⁰जब राजा के पुत्र मार्ग में थे, दाऊद को सूचना मिली। सूचना यह थी, “अबशालोम ने राजा के सभी पुत्रों को मार डाला है। कोई भी पुत्र बचा नहीं है।”

³¹राजा दाऊद ने अपने वस्त्र फाड़ डाले और धरती पर लेट गया। दाऊद के पास खड़े उसके सभी सेवकों ने भी अपने वस्त्र फाड़ डाले।

³²किन्तु शिमा (दाऊद के भाई) के पुत्र योनादाब ने दाऊद से कहा, “ऐसा मत सोचो कि राजा के सभी युवक पुत्र मार डाले गए हैं। नहीं, यह केवल अम्नोन है जो मारा गया है। जब से अम्नोन ने उसकी बहन तामार के साथ कुकर्म किया था तभी से अबशालोम ने यह योजना बनाई थी। ³³मेरे स्वामी राजा यह न सोचें कि सभी राजपुत्र मारे गए हैं। केवल अम्नोन ही मारा गया।”

³⁴अबशालोम भाग गया।

एक रक्षक नगर-प्राचीर पर खड़ा था। उसने पहाड़ी की दूसरी ओर से कई व्यक्तियों को आते देखा। ³⁵इसलिये योनादाब ने राजा दाऊद से कहा, “देखो, मैं बिल्कुल सही था। राजा के पुत्र आ रहे हैं।”

³⁶जब योनादाब ने ये बातें कही तभी राजपुत्र आ गए। वे जोर-जोर से रो रहे थे। दाऊद और उसके सभी सेवक रोने लगे। वे सभी बहुत विलाप कर रहे थे। ³⁷दाऊद अपने पुत्र (अम्नोन) के लिये बहुत दिनों तक रोया।

अबशालोम गशूर को भाग गया*

अबशालोम गशूर के राजा अम्मीहूर के पुत्र तल्मै के पास भाग गया। ³⁸अबशालोम के गशूर भाग जाने के बाद, वह वहाँ तीन वर्ष तक ठहरा। ³⁹अम्नोन की मृत्यु के बाद दाऊद शान्त हो गया। लेकिन अबशालोम उसे बहुत याद आता था।

योआब एक बुद्धिमती स्त्री को दाऊद के पास भेजता है

14 सरूयाह का पुत्र योआब जानता था कि राजा दाऊद अबशालोम के बारे में सोच रहा है। ²इसलिये योआब ने तकोआ का एक दूत वहाँ से एक बुद्धिमती स्त्री को लाने के लिये भेजा। योआब ने इस बुद्धिमती स्त्री से कहा, “कृपया बहुत अधिक शोकग्रस्त होने का दिखावा करो। शोक-वस्त्र पहन लो, तेल न लगाओ। वैसी स्त्री का व्यवहार करो जो किसी मृत के लिये कई दिन से रो रही है। ³राजा के पास जाओ और

अबशालोम ... गया तल्मै, अबशालोम का पितामह था। देखे 2शमू. 3:3

जो मैं कहता हूँ, उन्हीं शब्दों का उपयोग करते हुए उनसे बातें करो।” तब योआब ने उस बुद्धिमती स्त्री को क्या कहना है, यह बता दिया।

⁴तब तकोआ की उस स्त्री ने राजा से बातें कीं। वह फर्श पर गिर पड़ी उसका ललाट फर्श पर जा टिका। वह झुकी और बोली, “राजा, मुझे सहायता दे।”

⁵राजा दाऊद ने उससे कहा, “तुम्हारी समस्या क्या है?”

उस स्त्री ने कहा, “मैं विधवा हूँ। मेरा पति मर चुका है। ⁶मेरे दो पुत्र थे। ये दोनों पुत्र बाहर मैदानों में लड़े। उन्हें कोई रोकने वाला न था। एक पुत्र ने दूसरे पुत्र को मार डाला। ⁷अब सारा परिवार मेरे विरुद्ध है। वे मुझसे कहते थे, ‘उस पुत्र को लाओ जिसने अपने भाई को मार डाला। तब हम उसे मार डालेंगे, क्योंकि उसने अपने भाई को मार डाला था।’ इस प्रकार उसके उत्तराधिकारी से छुटकारा मिल सकता है। मेरा पुत्र अग्नि की आखिरी चिनगारी की तरह होगा, और वह अन्तिम चिनगारी जलेगी और बुझ जाएगी। तब मेरे मृत पति का नाम और उसकी सम्पत्ति इस धरती से मिट जायेगी।”

⁸तब राजा ने स्त्री से कहा, “घर जाओ। मैं स्वयं तुम्हारा मामला निपटाऊँगा।”

⁹तकोआ की स्त्री ने राजा से कहा, “हे राजा मेरे स्वामी, दोष मुझ पर आने दें! किन्तु आप और आपका राज्य निर्दोष है।”

¹⁰राजा दाऊद ने कहा, “उस व्यक्ति को लाओ जो तुम्हें बुरा-भला कहता है। तब वह व्यक्ति तुम्हें फिर परेशान नहीं करेगा।”

¹¹स्त्री ने कहा, “कृपया अपने यहोवा परमेश्वर के नाम पर शपथ लें कि आप इन लोगों को रोकेँगे। तब वे लोग जो हत्यारे को दण्ड देना चाहते हैं मेरे पुत्र को दण्ड नहीं देंगे।”

दाऊद ने कहा, “यहोवा शाश्वत है, तुम्हारे पुत्र को कोई व्यक्ति चोट नहीं पहुँचायेगा। तुम्हारे पुत्र का एक बाल भी बाँका नहीं होगा।”

¹²उस स्त्री ने कहा, “मेरे स्वामी, राजा कृपया मुझे आपसे कुछ कहने का अवसर दें।”

राजा ने कहा, “कहो”

¹³तब उस स्त्री ने कहा, “आपने परमेश्वर के लोगों के विरुद्ध यह योजना क्यों बनाई है? हाँ, जब आप यह

कहते हैं आप यह प्रकट करते हैं कि आप अपराधी हैं। क्यों? क्योंकि आप अपने पुत्र को वापस नहीं ला सके हैं जिसे आपने घर छोड़ने को विवश किया था। ¹⁴यह सही है कि हम सभी किसी दिन मरेंगे। हम लोग उस पानी की तरह हैं जो भूमि पर फेंका गया है। कोई भी व्यक्ति भूमि से उस पानी को इकट्ठा नहीं कर सकता। किन्तु परमेश्वर माफ करता है। उसके पास उन लोगों के लिए एक योजना है जो अपना घर छोड़ने को विवश किये गए हैं - परमेश्वर उनको अपने से अलग नहीं करता। ¹⁵मेरे प्रभु, राजा मैं यह बात कहने आपके पास आई। क्यों? क्योंकि लोगों ने मुझे भयभीत किया। मैंने अपने मन में कहा कि, ‘मैं राजा से बात करूँगा। संभव है राजा मेरी सुनने।’ ¹⁶राजा मेरी सुनने, और मेरी रक्षा उस व्यक्ति से करेंगे जो मुझे और मेरे पुत्र दोनों को मारना चाहते हैं और उन चीजों को प्राप्त करने से रोकना चाहते हैं जिन्हें परमेश्वर ने हमें दी है। ¹⁷मैं जानती हूँ* कि मेरे राजा मेरे प्रभु के शब्द मुझे शान्ति देंगे क्योंकि आप परमेश्वर के दूत के समान होंगे। आप समझेंगे कि क्या अच्छा और क्या बुरा है। यहोवा आपका परमेश्वर, आपके साथ होगा।”

¹⁸राजा दाऊद ने उस स्त्री को उत्तर दिया, “तुम्हें उस प्रश्न का उत्तर देना चाहिये जिसे मैं तुमसे पूछूँगा।”

उस स्त्री ने कहा, “मेरे प्रभु, राजा, कृपया अपना प्रश्न पूछें।”

¹⁹राजा ने कहा, “क्या योआब ने ये सारी बातें तुमसे कहने को कहा है?”

उस स्त्री ने जवाब दिया, मेरे प्रभु राजा, आपके जीवन की शपथ, आप सही हैं। आपके सेवक योआब ने ये बातें कहने के लिये कहा। ²⁰योआब ने यह इसलिये किया जिससे आप तथ्यों को दूसरी दृष्टि से देखेंगे। मेरे प्रभु आप परमेश्वर के दूत के समान बुद्धिमान हैं। आप सब कुछ जानते हैं जो पृथ्वी पर होता है।”

अबशालोम यरूशलेम लौटता है

²¹राजा ने योआब से कहा, “देखो, मैं वह करूँगा जिसके लिये मैंने वचन दिया है। अब कृपया युवक अबशालोम को वापस लाओ।”

जानती हूँ शाब्दिक “कहती हूँ।”

योआब ... देखेंगे शाब्दिक “जिससे तथ्य का बाहरी रूप बदल जाय।”

22 योआब ने भूमि तक अपना माथा झुकाया। उसने राजा दाऊद के प्रति आभार व्यक्त किया और कहा, "आज मैं समझता हूँ कि आप मुझ पर प्रसन्न हैं। मैं यह समझता हूँ क्योंकि आपने वही किया जो मेरी माँग थी।"

23 तब योआब उठा और गशूर गया तथा अबशालोम को यरूशलेम लाया। 24 किन्तु राजा दाऊद ने कहा, "अबशालोम अपने घर को लौट सकता है। वह मुझसे मिलने नहीं आ सकता।" इसलिये अबशालोम अपने घर को लौट गया। अबशालोम राजा से मिलने नहीं जा सका।

25 अबशालोम की अत्याधिक प्रशंसा उसके सुन्दर रूप के लिये थी। इज़्राएल में कोई व्यक्ति इतना सुन्दर नहीं था जितना अबशालोम। अबशालोम के सिर से पैर तक कोई दोष नहीं था। 26 हर एक वर्ष के अन्त में अबशालोम अपने सिर के बाल काटता था और उसे तोलता था। बालों का तोल लगभग पाँच पौंड* था। 27 अबशालोम के तीन पुत्र थे और एक पुत्री। उस पुत्री का नाम तामार था। तामार एक सुन्दर स्त्री थी।

अबशालोम योआब को अपने से मिलने के लिये विवश करता है

28 अबशालोम पूरे दो वर्ष तक, दाऊद से मिलने की स्वीकृति के बिना, यरूशलेम में रहा। 29 अबशालोम ने योआब के पास दूत भेजे। इन दूतों ने योआब से कहा कि तुम अबशालोम को राजा के पास भेजो। किन्तु योआब अबशालोम से मिलने नहीं आया। अबशालोम ने दूसरी बार सन्देश भेजा। किन्तु योआब ने फिर भी आना अस्वीकार किया।

30 तब अबशालोम ने अपने सेवकों से कहा, "देखो, योआब का खेत मेरे खेत से लगा है। उसके खेत में जौ की फसल है। जाओ और जौ को जला दो।"

इसलिये अबशालोम के सेवक गए और योआब के खेत में आग लगानी आरम्भ की। 31 योआब उठा और अबशालोम के घर आया। योआब ने अबशालोम से कहा, "तुम्हारे सेवकों ने मेरा खेत को क्यों जलाया?"

32 अबशालोम ने योआब से कहा, "मैंने तुमको सन्देश भेजा। मैंने तुमसे यहाँ आने को कहा। मैं तुम्हें राजा के पास भेजना चाहता था। मैं उससे पूछना चाहता था कि उसने गशूर से मुझे घर क्यों बुलाया। मैं उससे मिल नहीं सकता, अतः मेरे लिये गशूर में रहना कहीं अधिक अच्छा

था। अब मुझे राजा से मिलने दो। यदि मैंने पाप किया है तो वह मुझे मार सकता है।"

अबशालोम दाऊद से मिलता है

33 तब योआब राजा के पास आया और अबशालोम का कहा हुआ सुनाया। राजा ने अबशालोम को बुलाया। तब अबशालोम राजा के पास आया। अबशालोम ने राजा के सामने भूमि पर माथा टेक कर प्रणाम किया, और राजा ने अबशालोम का चुम्बन किया।

अबशालोम बहुत-से मित्र बनाता है

15 इसके बाद अबशालोम ने एक रथ और घोड़े अपने लिए लिये। जब वह रथ चलाता था तो अपने सामने पचास दौड़ते हुये व्यक्तियों को रखता था। 2 अबशालोम सवरे उठ जाता और द्वार* के निकट खड़ा होता। यदि कोई व्यक्ति ऐसा होता जिसकी कोई समस्या होती और न्याय के लिये राजा दाऊद के पास आया होता तो अबशालोम उससे पूछता, "तुम किस नगर के हो?" वह व्यक्ति उत्तर देता, "मैं अमुक हूँ और इज़्राएल के अमुक परिवार समूह का हूँ।" 3 तब अबशालोम उन व्यक्तियों से कहा करता, "देखो, जो तुम कह रहे हो वह शुभ और उचित है किन्तु राजा दाऊद तुम्हारी एक नहीं सुनेगा।"

4 अबशालोम यह भी कहता, "काश! मैं चाहता हूँ कि कोई मुझे इस देश का न्यायाधीश बनाता। तब मैं उन व्यक्तियों में से हर एक की सहायता कर सकता जो न्याय के लिये समस्या लेकर आते।"

5 जब कोई व्यक्ति अबशालोम के पास आता और उसके सामने प्रणाम करते को झुकता तो अबशालोम आगे बढ़ता और उस व्यक्ति से हाथ मिलाता। तब वह उस व्यक्ति का चुम्बन करता। 6 अबशालोम ऐसा उन सभी इज़्राएलियों के साथ करता जो राजा दाऊद के पास न्याय के लिये आते। इस प्रकार अबशालोम ने इज़्राएल के सभी लोगों का हृदय जीत लिया।

अबशालोम द्वारा दाऊद के राज्य को लेने की योजना

7 चार वर्ष बाद अबशालोम ने राजा दाऊद से कहा, "कृपया मुझे अपनी विशेष प्रतिज्ञा को पूरी करने जाने दें

द्वार यह वह स्थान था जहाँ लोग अपने सब कार्य करने आते थे। इसी स्थान पर न्याय की अदालतें होती थी।

जिसे मैंने हेब्रोन में यहोवा के सामने की थी।⁸ मैंने यह प्रतिज्ञा तब की थी जब मैं गशूर अराम में रहता था। मैंने कहा था, 'यदि यहोवा मुझे यरूशलेम लौटायेगा तो मैं यहोवा की सेवा करूँगा।'

⁹ राजा दाऊद ने कहा, "शान्तिपूर्वक जाओ।"

अबशालोम हेब्रोन गया।¹⁰ किन्तु अबशालोम ने इम्राएल के सभी परिवार समूहों में जासूस भेजे। इन जासूसों ने लोगों से कहा, "जब तुम तुरही की आवाज सुनो, तो कहो कि 'अबशालोम हेब्रोन में राजा हो गया।'"

¹¹ अबशालोम ने दो सौ व्यक्तियों को अपने साथ चलने के लिये आमन्त्रित किया। वे व्यक्ति उसके साथ यरूशलेम से बाहर गए। किन्तु वे यह नहीं जानते थे कि उसकी योजना क्या है।¹² अहीतोपेल दाऊद के सलाहकारों में से एक था। अहीतोपेल गीलो नगर का निवासी था। जब अबशालोम बलि-भेंटों को चढ़ा रहा था, उसने अहीतोपेल को अपने गीलो नगर से आने के लिये कहा। अबशालोम की योजना ठीक-ठीक चल रही थी और अधिक से अधिक लोग उसका समर्थन करने लगे।

दाऊद को अबशालोम के योजना की सूचना

¹³ एक व्यक्ति दाऊद को सूचना देने आया। उस व्यक्ति ने कहा, "इम्राएल के लोग अबशालोम का अनुसरण करना आरम्भ कर रहे हैं।"

¹⁴ तब दाऊद ने यरूशलेम में रहने वाले अपने सभी सेवकों से कहा, "हम लोगों को बच निकलना चाहिये! यदि हम बच नहीं निकलते तो अबशालोम हम लोगों को निकलने नहीं देगा। अबशालोम द्वारा पकड़े जाने के पहले हम लोग शीघ्रता करें। नहीं तो वह हम सभी को नष्ट कर देगा और वह यरूशलेम के लोगों को मार डालेगा।"

¹⁵ राजा के सेवकों ने राजा से कहा, "जो कुछ भी आप कहेंगे, हम लोग करेंगे।"

दाऊद और उसके आदमी बच निकलते हैं

¹⁶ राजा दाऊद अपने घर के सभी लोगों के साथ बाहर निकल गया। राजा ने घर की देखभाल के लिये अपनी दस पत्नियों को वहाँ छोड़ा।¹⁷ राजा अपने सभी लोगों को साथ लेकर बाहर निकला। वे नगर के अन्तिम मकान पर रुके।¹⁸ उसके सभी सेवक राजा के पास से गुजरे, और

सभी करेती, सभी पलेती और गती (गत से छः सौ व्यक्ति) राजा के पास से गुजरे।

¹⁹ राजा ने गत के इतै से कहा, "तुम लोग भी हमारे साथ क्यों जा रहे हो? लौट जाओ और नये राजा (अबशालोम) के साथ रहो। तुम विदेशी हो। यह तुम लोगों का स्वदेश नहीं है।"²⁰ अभी कल ही तुम हमारे साथ जुड़े। क्या मैं आज ही विभिन्न स्थानों पर जहाँ भी जा रहा हूँ, तुम्हें अपने साथ ले जाऊँ। नहीं! लौटो और अपने भाइयों को अपने साथ लो। मेरी प्रार्थना है कि तुम्हारे प्रति दया और विश्वास दिखाया जाय।"

²¹ किन्तु इतै ने राजा को उत्तर दिया, "यहोवा शाश्वत है, और जब तक आप जीवित हैं, मैं आपके साथ रहूँगा। मैं जीवन-मरण में आपके साथ रहूँगा।"

²² दाऊद ने इतै से कहा, "आओ, हम लोग किद्रोन नाले को पार करें।"

अतः गत का इतै और उसके सभी लोग अपने बच्चों सहित किद्रोन नाले के पार गए।²³ सभी लोग जोर से रो रहे थे। राजा दाऊद ने किद्रोन नाले को पार किया। तब सभी लोग मरुभूमि की ओर बढ़े।²⁴ सादोक और उसके साथ के लेवीवंशी परमेश्वर के साक्षीपत्र के सन्दूक को ले चल रहे थे। उन्होंने परमेश्वर के पवित्र सन्दूक को नीचे रखा। एब्यातार ने तब तक प्रार्थना* की जब तक सभी लोग यरूशलेम से बाहर नहीं निकल गए।

²⁵ राजा दाऊद ने सादोक से कहा, "परमेश्वर के पवित्र सन्दूक को यरूशलेम लौटा ले जाओ। यदि यहोवा मुझ पर दयालु है तो वह मुझे वापस लौटाएगा, और यहोवा मुझे अपना पवित्र सन्दूक, और वह स्थान जहाँ वह रखा है, देखने देगा।"²⁶ किन्तु यदि यहोवा कहता है कि वह मुझ पर प्रसन्न नहीं है तो वह मेरे विरुद्ध, जो कुछ भी चाहता है, कर सकता है।"

²⁷ राजा ने याजक सादोक से कहा, "तुम एक दुष्टा हो। शान्तिपूर्वक नगर को जाओ। अपने पुत्र अहीमास और एब्यातार के पुत्र योनातन को अपने साथ लो।"²⁸ मैं उन स्थानों के निकट प्रतीक्षा करूँगा जहाँ से लोग मरुभूमि

प्रार्थना शाब्दिक "आगे बढ़े" इसका अर्थ "सुगन्धि जलाना", बलि-भेंट करना, या इसका अर्थ यह हो सकता है कि एब्यातार तब तक पवित्र सन्दूक की बगल में खड़ा रहा जब तक सभी लोग वहाँ से नहीं निकले।

में जाते हैं। मैं वहाँ तब तक प्रतीक्षा करूँगा जब तक तुमसे कोई सूचना नहीं मिलती।”

²⁹इसलिये सादोक और एब्द्यातार परमेश्वर का पवित्र सन्दूक वापस यरूशलेम ले गए और वहीं ठहरे।

अहीतोपेल के विरुद्ध दाऊद की प्रार्थना

³⁰दाऊद जैतूनों के पर्वत पर चढ़ा। वह रो रहा था। उसने अपना सिर ढक लिया और वह बिना जूते के गया। दाऊद के साथ के सभी व्यक्तियों ने भी अपना सिर ढक लिया। वे दाऊद के साथ रोते हुए गए।

³¹एक व्यक्ति ने दाऊद से कहा, “अहीतोपेल लोगों में से एक है जिसने अबशालोम के साथ योजना बनाई।” तब दाऊद ने प्रार्थना की, “हे यहोवा, मैं तुझसे प्रार्थना करता हूँ कि तू अहीतोपेल की सलाह को विफल कर दे।” ³²दाऊद पर्वत की चोटी पर आया। यही वह स्थान था जहाँ वह प्रायः परमेश्वर से प्रार्थना करता था। उस समय एरेकी हूशै उसके पास आया। हूशै का अंगरखा फटा था और उसके सिर पर धूल थी।*

³³दाऊद ने हूशै से कहा, “यदि तुम मेरे साथ चलते हो तो तुम देख-रेख करने वाले अतिरिक्त व्यक्ति होगे। ³⁴किन्तु यदि तुम यरूशलेम को लौट जाते हो तो तुम अहीतोपेल की सलाह को व्यर्थ कर सकते हो। अबशालोम से कहो, ‘महाराज, मैं आपका सेवक हूँ। मैंने आपके पिता की सेवा की, किन्तु अब मैं आपकी सेवा करूँगा।’ ³⁵याजक सादोक और एब्द्यातार तुम्हारे साथ होंगे। तुम्हें वे सभी बातें उनसे कहनी चाहिए जिन्हें तुम राजमहल में सुनो। ³⁶सादोक का पुत्र अहीमास और एब्द्यातार का पुत्र योनातन उनके साथ होंगे। तुम उन्हें, हर बात जो सुनो, मुझसे कहने के लिये भेजोगे।”

³⁷तब दाऊद का मित्र हूशै नगर में गया, और अबशालोम यरूशलेम आया।

सीबा दाऊद से मिलता है

16 दाऊद जैतून पर्वत की चोटी पर थोड़ी दूर चला। वहाँ मपीबोशेत का सेवक सीबा, दाऊद से मिला। सीबा के पास काठी सहित दो खच्चर थे। खच्चरो पर दो सौ रोटियाँ, सौ किशमिश के गुच्छे, सौ ग्रीष्मफल

हूशै ... धूलि थी यह प्रकट करता था कि वह बहुत दुःखी है।

और दाखमधु से भरी एक मशक थी। ²राजा दाऊद ने सीबा से कहा, “ये चीजें किसलिये हैं?”

सीबा ने उत्तर दिया, “खच्चर राजा के परिवार की सवारी के लिये हैं। रोटी और ग्रीष्म फल सेवकों को खाने के लिये हैं और यदि कोई व्यक्ति मरुभूमि में कमजोरी महसूस करे तो वह दाखमधु पी सकेगा।”

³राजा ने पूछा, “मपीबोशेत* कहाँ है?”

सीबाने राजा को उत्तर दिया, “मपीबोशेत यरूशलेम में ठहरा है क्योंकि वह सोचता है, ‘आज इज़्राएली मेरे पितामह का राज्य मुझे वापस दे देंगे।’”

⁴तब राजा ने सीबा से कहा, “बहुत ठीक। जो कुछ मपीबोशेत का है उसे अब मैं तुम्हें देता हूँ।”

सीबा ने कहा, “मैं आपको प्रणाम करता हूँ। मैं आशा करता हूँ कि मैं आपको सदा प्रसन्न कर सकूँगा।”

शिमी दाऊद को शाप देता है

⁵दाऊद बहूरीम पहुँचा। शाऊल के परिवार का एक व्यक्ति बहूरीम से बाहर निकला। इस व्यक्ति का नाम शिमी था जो गेरा का पुत्र था। शिमी दाऊद को बुरा कहता हुआ बाहर आया, और वह बुरी-बुरी बातें बार-बार कहता रहा।

⁶शिमी ने दाऊद और उसके सेवकों पर पत्थर फेंकना आरम्भ किया। किन्तु लोग और सैनिक दाऊद के चारों ओर इकट्ठे हो गए—वे उसके चारों ओर थे। ⁷शिमी ने दाऊद को शाप दिया। उसने कहा, “ओह हत्यारे! * भाग जाओ, निकल जाओ, निकल जाओ। ⁸यहोवा तुम्हें दण्ड दे रहा है। क्यों? क्योंकि तुमने शाऊल के परिवार के व्यक्तियों को मार डाला। तुमने शाऊल के राजपद को चुराया। किन्तु अब यहोवा ने राज्य तुम्हारे पुत्र अबशालोम को दिया है। अब वे ही बुरी घटनायें तुम्हारे लिये घटित हो रही हैं। क्यों? क्योंकि तुम हत्यारे हो।”

⁹सरूयाह के पुत्र अबीशै ने राजा से कहा, “मेरे प्रभु, राजा! यह मृत कुत्ता आपको शाप क्यों दे रहा है? मुझे आगे जाने दें और शिमी का सिर काट लेने दें।”

¹⁰किन्तु राजा ने उत्तर दिया, “सरूयाह के पुत्रों। मैं क्या कर सकता हूँ? निश्चय ही शिमी मुझे शाप दे रहा है। किन्तु यहोवा ने उसे मुझे शाप देने को कहा।”

मपीबोशेत शाब्दिक “तुम्हारे स्वामी का पौत्र।”

ओह हत्यारे शाब्दिक “खूनी।”

¹¹दाऊद ने अबीशै और अपने सभी सेवकों से यह भी कहा, “देखो मेरा अपना पुत्र ही (अबशालोम) मुझे मारने का प्रयत्न कर रहा है। यह व्यक्ति (शिमी), जो बिन्यामीन परिवार समूह का है, मुझको मार डालने का अधिक अधिकारी है। उसे अकेला छोड़ो। उसे मुझे बुरा-भला कहने दो। यहोवा ने उसे ऐसा करने को कहा है। ¹²संभव है कि उन बुराइयों को जो मेरे साथ हो रही है, यहोवा देखे। तब संभव है कि यहोवा मुझे आज शिमी द्वारा कही गई हर एक बात के बदले, कुछ अच्छा दे।”

¹³इसलिये दाऊद और उसके अनुयायी अपने रास्तों पर नीचे सड़क से उतर गए। किन्तु शिमी दाऊद के पीछे लगा रहा। शिमी सड़क की दूसरी ओर चलने लगा। शिमी अपने रास्ते पर दाऊद को बुरा-भला कहता रहा। शिमी ने दाऊद पर पत्थर और धूल भी फेंकी।

¹⁴राजा दाऊद और उसके सभी लोग यरदन नदी पहुँचे। राजा और उसके लोग थक गए थे। अतः उन्होंने बहरीम में विश्राम किया।

¹⁵अबशालोम, अहीतोपेल और इम्राएल के सभी लोग यरूशलेम आए। ¹⁶दाऊद का एरेकी मित्र हूशै अबशालोम के पास आया। हूशै ने अबशालोम से कहा, “राजा दीर्घायु हो। राजा दीर्घायु हो।”

¹⁷अबशालोम ने पूछा, “तुम अपने मित्र दाऊद के विश्वासपात्र क्यों नहीं हो? तुमने अपने मित्र के साथ यरूशलेम को क्यों नहीं छोड़ा?”

¹⁸उन्होंने कहा, “मैं उस व्यक्ति का हूँ जिसे यहोवा चुनता है। इन लोगों ने और इम्राएल के लोगों ने आपको चुना। मैं आपके साथ रहूँगा। ¹⁹बीते समय में मैंने आपके पिता की सेवा की। इसलिये, अब मैं दाऊद के पुत्र की सेवा करूँगा। मैं आपकी सेवा करूँगा।”

अबशालोम अहीतोपेल से सलाह लेता है

²⁰अबशालोम ने अहीतोपेल से कहा, “कृपया हमें बताये कि क्या करना चाहिये।”

²¹अहीतोपेल ने अबशालोम से कहा, “तुम्हारे पिता ने अपनी कुछ रखैल को घर की देख-भाल के लिये छोड़ा है। जाओ, और उनके साथ शारीरिक सम्बन्ध करो। तब सभी इम्राएली यह जानेंगे कि तुम्हारे पिता तुमसे घृणा करते हैं और तुम्हारे सभी लोग तुमको अधिक समर्थन देने के लिये उत्साहित होंगे।”

²²तब उन लोगों ने अबशालोम के लिये महल की छत पर एक तम्बू डाला और अबशालोम ने अपने पिता की रखैलों के साथ शारीरिक सम्बन्ध किया। सभी इम्राएलियों ने इसे देखा। ²³उस समय अहीतोपेल की सलाह दाऊद और अबशालोम दोनों के लिये बहुत महत्वपूर्ण थी। यह उतनी ही महत्वपूर्ण थी जितनी मनुष्य के लिये परमेश्वर की बात।

अहीतोपेल दाऊद के बारे में सलाह देता है

17 अहीतोपेल ने अबशालोम से यह भी कहा, “मुझे अब बारह हजार सैनिक चुनने दो। तब मैं आज की रात दाऊद का पीछा करूँगा। ²मैं उसे तब पकड़ूँगा जब वह थका तथा कमजोर होगा। मैं उसे भयभीत करूँगा। और उसके सभी व्यक्ति उसे छोड़ भागेंगे। किन्तु मैं केवल राजा दाऊद को मारूँगा। ³तब मैं सभी लोगों को तुम्हारे पास वापस लाऊँगा। यदि दाऊद मर गया तो शेष सब लोगों को शान्ति प्राप्त होगी।”

⁴यह योजना अबशालोम और इम्राएल के सभी प्रमुखों को पसन्द आई। ⁵किन्तु अबशालोम ने कहा, “एरेकी हूशै को अब बुलाओ। मैं उससे भी सुनना चाहता हूँ कि वह क्या कहता है।”

हूशै अहीतोपेल की सलाह नष्ट करता है

⁶हूशै अबशालोम के पास आया। अबशालोम ने हूशै से कहा, “अहीतोपेल ने यह योजना बताई है। क्या हम लोग इस पर अमल करें? यदि नहीं तो हमें, अपनी बताओ।”

⁷हूशै ने अबशालोम से कहा, “इस समय अहीतोपेल की सलाह ठीक नहीं है।” ⁸उसने आगे कहा, “तुम जानते हो कि तुम्हारे पिता और उनके आदमी शक्तिशाली हैं। वे उस रीछनी की तरह खुंखार हैं जिसके बच्चे छीन लिये गये हों। तुम्हारा पिता कुशल योद्धा है। वह सारी रात लोगों के साथ नहीं ठहरेगा। ⁹वह पहले ही से संभवतः किसी गुफा या अन्य स्थान पर छिपा है। यदि तुम्हारा पिता तुम्हारे व्यक्तियों पर पहले आक्रमण करता है तो लोग इसकी सूचना पाएँगे, और वे सोचेंगे, ‘अबशालोम के समर्थक हार रहे हैं!’ ¹⁰तब वे लोग भी जो सिंह की तरह वीर हैं, भयभीत हो जाएँगे। क्यों? क्योंकि सभी इम्राएली जानते हैं कि तुम्हारा पिता शक्तिशाली योद्धा है और उसके आदमी वीर हैं।”

11“मेरा सुझाव यह है: तुम्हें दान से लेकर बेशेबा तक के सभी इज्राएलियों को इकट्ठा करना चाहिये। तब बड़ी संख्या में लोग समुद्र की रेत के कणों समान होंगे। तब तुम्हें स्वयं युद्ध में जाना चाहिये।¹² हम दाऊद को उस स्थान से, जहाँ वह छिपा है, पकड़ लेंगे। हम दाऊद पर उस प्रकार टूट पड़ेंगे जैसे ओस भूमि पर पड़ती है। हम लोग दाऊद और उसके सभी व्यक्तियों को मार डालेंगे। कोई व्यक्ति जीवित नहीं छोड़ा जायेगा।¹³ यदि दाऊद किसी नगर में भागता है तो सभी इज्राएली उस नगर में रस्सियाँ लाएँगे और हम लोग उस नगर की दिवारों को घसीट लेंगे। उस नगर का एक पत्थर भी नहीं छोड़ा जाएगा।”

14 अबशालोम और इज्राएलियों ने कहा, “एरेकी हूशै की सलाह अहीतोपेल की सलाह से अच्छी है।” उन्होंने ऐसा कहा क्योंकि यह यहोवा की योजना थी। यहोवा ने अहीतोपेल की सलाह की व्यर्थ करने की योजना बनाई थी। इस प्रकार यहोवा अबशालोम को दण्ड दे सकता था।

हूशै दाऊद के पास चेतावनी भेजता है

15 हूशै ने वे बातें याजक सादोक और एब्यातार से कहीं। हूशै ने उस योजना के बारे में उन्हें बताया जिसे अहीतोपेल ने अबशालोम और इज्राएल के प्रमुखों को सुझाया था। हूशै ने सादोक और एब्यातार को वह योजना भी बताई जिसे उसने सुझाया था। हूशै ने कहा, “16 शीम्रा! दाऊद को सूचना भेजो। उससे कहो कि आज की रात वह उन स्थानों पर न रहे जहाँ से लोग मरुभूमि को पार करते हैं। अपितु यरदन नदी को तुरन्त पार कर ले। यदि वह नदी को पार कर लेता है तो राजा और उसके लोग नहीं पकड़े जायेंगे।”

17 याजकों के पुत्र योनातन और अहीमास, एनरोगेल पर प्रतीक्षा कर रहे थे। वे नगर में जाते हुए दिखाई नहीं पड़ना चाहते थे, अतः एक गुलाम लड़की उनके पास आई। उसने उन्हें सन्देश दिया। तब योनातन और अहीमास गए और उन्होंने यह सन्देश राजा दाऊद को दिया।

18 किन्तु एक लड़के ने योनातन और अहीमास को देखा। लड़का अबशालोम से कहने के लिये दौड़ा। योनातन और अहीमास तेजी से भाग निकले। वे बहारीम में एक व्यक्ति के घर पहुँचे। उस व्यक्ति के आँगन में एक कुँआ

था। योनातन और अहीमास इस कुँए में उतर गये।¹⁹ उस व्यक्ति की पत्नी ने उस पर एक चादर डाल दी। तब उसने पूरे कुँए को अन्न से ढक दिया। कुँआ अन्न की ढेर जैसा दिखता था, इसलिये कोई व्यक्ति यह नहीं जान सकता था कि योनातन और अहीमास वहाँ छिपे हैं।²⁰ अबशालोम के सेवक उस घर की स्त्री के पास आए। उन्होंने पूछा, “योनातन और अहीमास कहाँ हैं?”

उस स्त्री ने अबशालोम के सेवकों से कहा, “वे पहले ही नाले को पार कर गए हैं।”

अबशालोम के सेवक तब योनातन और अहीमास की खोज में चले गए। किन्तु वे उनको न पा सके। अतः अबशालोम के सेवक यरूशलेम लौट गए।

21 जब अबशालोम के सेवक चले गए, योनातन और अहीमास कुँए से बाहर आए। वे गए और उन्होंने दाऊद से कहा, “शीम्राता करें, नदी को पार कर जायँ। अहीतोपेल ने ये बातें आपके विरुद्ध कही हैं।”

22 तब दाऊद और उसके सभी लोग यरदन नदी के पार चले गए। सूर्य निकलने के पहले दाऊद के सभी लोग यरदन नदी को पार कर चुके थे।

अहीतोपेल आत्महत्या करता है

23 अहीतोपेल ने देखा कि इज्राएली उसकी सलाह नहीं मानते। अहीतोपेल ने अपने गधे पर काठी रखी। वह अपने नगर को घर चला गया। उसने अपने परिवार के लिये योजना बनाई। तब उसने अपने को फाँसी लगा ली। जब अहीतोपेल मर गया, लोगों ने उसे उसकी पिता की कब्र में दफना दिया।

अबशालोम यरदन नदी को पार करता है

24 दाऊद महनैम पहुँचा।

अबशालोम और सभी इज्राएली जो उसके साथ थे, यरदन नदी को पार कर गए।²⁵ अबशालोम ने अमासा को सेना का सेनापति बनाया। अमासा ने योआब का स्थान लिया।* अमासा इज्राएली यित्रों का पुत्र था।

अमासा ... लिया योआब तब भी दाऊद का समर्थन करता था। योआब दाऊद की सेना सेनापतियों में से एक था जब दाऊद अबशालोम से भाग रहा था। देखें 2शमू. 18:21

अमासा की माँ, सरूयाह की बहन और नाहाश की पुत्री, अबीगैल थी* (सरूयाह योआब की माँ थी।)

²⁶अबशालोम और इम्राएलियों ने अपना डेरा गिलाद प्रदेश में डाला।

शोबी, माकीर, बर्जिल्लै

²⁷दाऊद महनैम पहुँचा। शोबी, माकीर और बर्जिल्लै उस स्थान पर थे। (नाहाश का पुत्र शोबी अम्मोनी नगर रब्बा का था। अम्मोएल का पुत्र माकीर लो-दोबर का था, और बर्जिल्लै, रेगलीम, गिलाद का था।) ²⁸⁻²⁹उन्होंने कहा, “मरुभूमि में लोग थके, भूखे और प्यासे हैं।” इसलिये वे दाऊद और उसके आदमियों के खाने के लिये बहुत-सी चीजें लाये। वे बिस्तर, कटोरे और मिट्टी के बर्तन ले आए। वे गेंहूँ, जौ आटा, भूने अन्न फलियाँ, तिल, सूखे बीज, शहद, मक्खन, भेड़ें और गाय के दूध का पनीर भी ले आए।

दाऊद युद्ध की तैयारी करता है

18 दाऊद ने अपने लोगों को गिना। उसने हजार सैनिकों और सौ सैनिकों का संचालन करने के लिये नायक चुने। ²दाऊद ने लोगों को तीन टुकड़ियों में बाँटा, और तब दाऊद ने लोगों को आगे भेजा। योआब एक तिहाई सेना का नायक था। अबीशै सरूयाह का पुत्र, योआब का भाई सेना के दूसरे तिहाई भाग का नायक था, और गत का इतै अन्तिम तिहाई भाग का नायक था।

राजा दाऊद ने लोगों से कहा, “मैं भी तुम लोगों के साथ चलूँगा।”

³किन्तु लोगों ने कहा, “नहीं! आपको हमारे साथ नहीं जाना चाहिये। क्यों? क्योंकि यदि हम लोग युद्ध से भागे तो अबशालोम के सैनिक परवाह नहीं करेंगे। यदि हम आधे मार दिये जाए तो भी अबशालोम के सैनिक परवाह नहीं करेंगे। किन्तु आप हम लोगों के दस हजार के बराबर हैं। आपके लिये अच्छा है कि आप नगर में रहें। तब, यदि हमें मदद की आवश्यकता पड़े तो आप सहायता कर सकें।”

⁴राजा ने अपने लोगों से कहा, “मैं वहीं करूँगा जिसे आप लोग सर्वोत्तम समझते हैं।”

तब राजा द्वार की बगल में खड़ा रहा। सेना आगे बढ़ गई। वे सौ और हजार की टुकड़ियों में गए।

“युवक अबशालोम के साथ उदार रहो!”

⁵राजा ने योआब, अबीशै और इतै को आदेश दिया। उसने कहा, “मेरे लिये यह करो: युवक अबशालोम के प्रति उदार रहना!” सभी लोगों ने अबशालोम के बारे में नायको के लिये राजा का आदेश सुना।

दाऊद की सेना अबशालोम की सेना को हराती है

⁶दाऊद की सेना अबशालोम के इम्राएलियों के विरुद्ध रणभूमि में गई। उन्होंने एमैम के वन में युद्ध किया। ⁷दाऊद की सेना ने इम्राएलियों को हरा दिया। उस दिन बीस हजार व्यक्ति मारे गए। ⁸युद्ध पूरे देश में फैल गया। किन्तु उस दिन तलवार से मरने की अपेक्षा जंगल में व्यक्ति अधिक मरे।

⁹ऐसा हुआ कि अबशालोम दाऊद के सेवकों से मिला। अबशालोम बच भागने के लिये अपने खच्चर पर चढ़ा। खच्चर विशाल बांज के वृक्ष की शाखाओं के नीचे गया। शाखायें मोटी थीं और अबशालोम का सिर पेड़ में फँस गया। उसका खच्चर उसके नीचे से भाग निकला अतः अबशालोम भूमि के ऊपर लटका रहा।

¹⁰एक व्यक्ति ने यह होते देखा। उसने योआब से कहा, “मैंने अबशालोम को एक बांज के पेड़ में लटके देखा है।”

¹¹योआब ने उस व्यक्ति से कहा, “तुमने उसे मार क्यों नहीं डाला, और उसे जमीन पर क्यों नहीं गिर जाने दिया? मैं तुम्हें एक पेटी और चाँदी के दस सिक्के देता।”

¹²उस व्यक्ति ने योआब से कहा, “मैं राजा के पुत्र को तब भी चोट पहुँचाने की कोशिश नहीं करता जहाँ तुम मुझे हजार चाँदी के सिक्के देते। क्यों? क्योंकि हम लोगों ने तुमको, अबीशै और इतै को दिये गए राजा के आदेश को सुना। राजा ने कहा, ‘सावधान रहो, युवक अबशालोम को चोट ने पहुँचे।’ ¹³यदि मैंने अबशालोम को मार दिया होता तो राजा स्वयं इसका पता लगा लेता और तुम मुझे सजा देते।”

¹⁴योआब ने कहा, “मैं तुम्हारे साथ समय नष्ट नहीं करूँगा।”

अबशालोम अब भी बांज वृक्ष में लटका हुआ, जीवित था। योआब ने तीन भाले लिये। उसने भालों को

अमासा थी शाब्दिक यित्री ने सरूयाह की बहन और नाहाश की पुत्री अबीगैल के साथ शारीरिक सम्बन्ध किया था।

अबशालोम पर फेंका। भाले अबशालोम के हृदय को बधते हुये निकल गये।¹⁵ योआब के साथ दस युवक थे जो उसे युद्ध में सहायता करते थे। वे दस व्यक्ति अबशालोम के चारों ओर आए और उसे मार डाला।

¹⁶ योआब ने तुरही बजाई और अबशालोम के ड्राम्पली लोगों का पीछा करना बन्द करने को कहा।

¹⁷ तब योआब के व्यक्तियों ने अबशालोम का शव उठाया और उसे जंगल के एक विशाल गड्ढे में फेंक दिया। उन्होंने विशाल गड्ढा को बहुत से पत्थरों से भर दिया।

¹⁸ जब अबशालोम जीवित था, उसने राजा की घाटी में एक स्तम्भ खड़ा किया था। अबशालोम ने कहा था, “मेरा कोई पुत्र मेरे नाम को चलाने वाला नहीं है।” इसलिये उसने स्तम्भ को अपना नाम दिया। वह स्तम्भ आज भी “अबशालोम का स्मृति-चिन्ह” कहा जाता है।

योआब दाऊद को सूचना देता है

¹⁹ सादोक के पुत्र अहीमास ने योआब से कहा, “मुझे अब दौड़ जाने दो और राजा दाऊद को सूचना पहुँचाने दो। मैं उससे कहूँगा कि यहोवा ने उन्हें उनके शत्रुओं के हाथ से मुक्त कर दिया है।”

²⁰ योआब ने अहीमास को उत्तर दिया, “नहीं, आज तुम दाऊद को सूचना नहीं दोगे। तुम सूचना किसी अन्य समय पहुँचा सकते हो, किन्तु आज नहीं, क्यों? क्योंकि राजा का पुत्र मर गया है।”

²¹ तब योआब ने एक कुशी व्यक्ति से कहा, “जाओ राजा से वह सब कहो जो तुमने देखा है।” कुशी ने योआब को प्रणाम किया।

तब कुशी दाऊद को सूचना देने दौड़ पड़ा।

²² किन्तु सादोक के पुत्र अहीमास ने योआब से फिर प्रार्थना की, “जो कुछ भी हो, उसकी चिन्ता नहीं, कृपया मुझे भी कुशी के पीछे दौड़ जाने दें।”

योआब ने कहा, “बेटे! तुम सूचना क्यों ले जाना चाहते हो? तुम जो सूचना ले जाओगे उसका कोई पुरस्कार नहीं मिलेगा।”

²³ अहीमास ने उत्तर दिया, “चाहे जो हो, चिन्ता नहीं, मैं दौड़ जाऊँगा।”

योआब ने अहीमास से कहा, “दौड़ो।”

तब अहीमास यरदन की घाटी से होकर दौड़ा। वह कुशी को पीछे छोड़ गया।

दाऊद सूचना पाता है

²⁴ दाऊद दोनों दरवाजों के बीच बैठा था। पहरेदार द्वार की दीवारों के ऊपर छत पर गया। पहरेदार ने ध्यान से देखा और एक व्यक्ति को अकेले दौड़ते देखा।²⁵ पहरेदार ने दाऊद से कहने के लिये जोर से पुकारा।

राजा दाऊद ने कहा, “यदि व्यक्ति अकेला है तो वह सूचना ला रहा है।”

व्यक्ति नगर के निकट से निकट आता जा रहा था।²⁶ पहरेदार ने दूसरे व्यक्ति को दौड़ते देखा। पहरेदार ने द्वाररक्षक को बुलाया, “देखो! दूसरा व्यक्ति अकेले दौड़ रहा है।”

राजा ने कहा, “वह भी सूचना ला रहा है।”

²⁷ पहरेदार ने कहा, “मुझे लगता है कि पहला व्यक्ति सादोक का पुत्र अहीमास की तरह दौड़ रहा है।”

राजा ने कहा, “अहीमास अच्छा आदमी है। वह अच्छी सूचना ला रहा होगा।”

²⁸ अहीमास ने राजा को पुकार कर कहा। “सब कुछ बहुत अच्छा है!” अहीमास राजा के सामने प्रणाम करने झुका। उसका माथा भूमि के समीप था। अहीमास ने कहा, अपने यहोवा परमेश्वर की स्तुति करो! मेरे स्वामी राजा, यहोवा ने उन व्यक्तियों को हरा दिया है जो आपके विरुद्ध थे।”

²⁹ राजा ने पूछा, “क्या युवक अबशालोम कुशल से है?”

अहीमास ने उत्तर दिया, “जब योआब ने मुझे भेजा तब मैंने कुछ बड़ी उत्तेजना देखी। किन्तु मैं यह नहीं समझ सका कि वह क्या था?”

³⁰ तब राजा ने कहा, “यहाँ खड़े रहो, और प्रतीक्षा करो।” अहीमास हटकर खड़ा हो गया और प्रतिक्षा करने लगा।

³¹ कुशी आया। उसने कहा, “मेरे स्वामी राजा के लिये सूचना। आज यहोवा ने उन लोगों को सजा दी है जो आपके विरुद्ध थे।”

³² राजा ने कुशी से पूछा, “क्या युवक अबशालोम कुशल से है?”

कुशी ने उत्तर दिया, “मुझे आशा है कि आपके शत्रु और सभी लोग जो आपके विरुद्ध चोट करने आयेगे, वे इस युवक (अबशालोम) की तरह सजा पायेंगे।”

³³तब राजा ने समझ लिया कि अबशालोम मर गया है। राजा बहुत परेशान हो गया। वह नगर द्वार के ऊपर के कमरे में चला गया। वह वहाँ रोया। वह अपने कमरे में गया, और अपने रास्ते पर चलते उसने कहा, “ऐ मेरे पुत्र अबशालोम! मैं चाहता हूँ कि मैं तुम्हारे लिये मर गया होता। ऐ अबशालोम, मेरे पुत्र, मेरे पुत्र!”

योआब दाऊद को फटकारता है

19 लोगों ने योआब को सूचना दी। उन्होंने योआब से कहा, “देखो, राजा अबशालोम के लिये रो रहा है और बहुत दुःखी है।”

²दाऊद की सेना ने उस दिन विजय पाई थी। किन्तु वह दिन सभी लोगों के लिये बहुत शोक का दिन हो गया। यह शोक का दिन था, क्योंकि लोगों ने सुना, “राजा अपने पुत्र के लिये बहुत दुःखी है।”

³लोग नगर में चुपचाप आए। वे उन लोगों की तरह थे जो युद्ध में पराजित हो गए हो और भाग आए हों। ⁴राजा ने अपना मुँह ढक लिया था। वह फूट-फूट कर रो रहा था, “मेरे पुत्र अबशालोम, ऐ अबशालोम! मेरे पुत्र, मेरे बेटे!”

⁵योआब राजा के महल में आया। योआब ने राजा से कहा, “आज तुम अपने सभी सेवकों के मुँह को भी लजा से ढके हो! आज तुम्हारे सेवकों ने तुम्हारा जीवन बचाया। उन्होंने तुम्हारे पुत्रों, पुत्रियों, पत्नियों, और दासियों के जीवन को बचाया। ⁶तुम्हारे सेवक इसलिये लज्जित हैं कि तुम उनसे प्रेम करते हो जो तुमसे घृणा करते हैं और तुम उनसे घृणा करते हो जो तुमसे प्रेम करते हैं। आज तुमने यह स्पष्ट कर दिया है कि तुम्हारे अधिकारी और तुम्हारे लोग तुम्हारे लिये कुछ नहीं हैं। आज मैं समझता हूँ कि यदि अबशालोम जीवित रहता और हम सभी मार दिये गए होते तो तुम्हें बड़ी प्रसन्नता होती। ⁷अब खड़े होओ तथा अपने सेवकों से बात करो और उनको प्रोत्साहित करो। मैं यहोवा की शपथ खाकर कहता हूँ कि यदि तुम यह करने बाहर नहीं निकलते तो आज की रात तुम्हारे साथ कोई व्यक्ति नहीं रह जायेगा। बचपन से आज तक तुम पर जितनी विपत्तियाँ आई हैं, उन सबसे यह विपत्ति और बदतर होगी।”

⁸तब राजा नगर-द्वार पर गया। सूचना फैली कि राजा नगर-द्वार पर है। इसलिये सभी लोग राजा को देखने आये।

दाऊद फिर राजा बनता है

सभी अबशालोम के समर्थक इज़्राएली अपने घरों को भाग गए थे। ⁹इज़्राएली के सभी परिवार समूहों के लोग आपस में तर्क-वितर्क करने लगे। उन्होंने कहा, “राजा दाऊद ने हमें पलिशितियों और हमारे अन्य शत्रुओं से बचाया। दाऊद अबशालोम के सामने भाग खड़ा हुआ। ¹⁰हम लोगों ने अबशालोम को अपने ऊपर शासन करने के लिये चुना था। किन्तु अब वह युद्ध में मर चुका है। हम लोगों को दाऊद को फिर राजा बनाना चाहिये।”

¹¹राजा दाऊद ने याजक सादोक और एब्यातार को सन्देश भेजा। दाऊद ने कहा, “यहूदा के प्रमुखों से बात करो। कहो, ‘तुम लोग अन्तिम परिवार समूह क्यों हो जो राजा दाऊद को अपने राजमहल में वापस लाना चाहते हो? देखो, सभी इज़्राएली राजा को महल में लाने के बारे में बातें कर रहे हैं। ¹²तुम मेरे भाई हो, तुम मेरे परिवार हो। फिर भी तुम्हारा परिवार समूह राजा को वापस लाने में अन्तिम क्यों रहा?’ ¹³और अमासा से कहो, ‘तुम मेरे परिवार के अंग हो। परमेश्वर मुझे दण्ड दे यदि मैं तुमको योआब के स्थान पर सेना का नायक बनाऊँ।’”

¹⁴दाऊद ने यहूदा के लोगों के दिल को प्रभावित किया, अतः वे एक व्यक्ति की तरह एकमत हो गए। यहूदा के लोगों ने राजा को सन्देश भेजा। उन्होंने कहा, “अपने सभी सेवकों के साथ वापस आओ!”

¹⁵तब राजा दाऊद यरदन नदी तक आया। यहूदा के लोग राजा से मिलने गिलगाल आए। वे इसलिये आए कि वे राजा को यरदन नदी के पार ले जाए।

शिमी दाऊद से क्षमा याचना करता है

¹⁶गेरा का पुत्र शिमी बिन्यामीन परिवार समूह का था। वह बहुरीम में रहता था। शिमी ने राजा दाऊद से मिलने की शीघ्रता की। शिमी यहूदा के लोगों के साथ आया। ¹⁷शिमी के साथ बिन्यामीन परिवार के एक हजार लोग भी आए। शाऊल के परिवार का सेवक सीबा भी आया। सीबा अपने साथ अपने पन्द्रह पुत्रों और बीस सेवकों को लाया। ये सभी लोग राजा दाऊद से मिलने के लिये यरदन नदी पर शीघ्रता से पहुँचे।

¹⁸लोग यरदन नदी पार करके राजा के परिवार को यहूदा में वापस लाने के लिये गये। राजा ने जो चाहा, लोगों ने किया। जब राजा नदी पार कर रहा था, गेरा का

पुत्र शिमी उससे मिलने आया। शिमी राजा के सामने भूमि तक प्रणाम करने झुका।¹⁹ शिमी ने राजा से कहा, “मेरे स्वामी, जो मैंने अपराध किये उन पर ध्यान न दे। मेरे स्वामी राजा, उन बुरे कामों को याद न करे जिन्हें मैंने तब किये जब आपने यरूशलेम को छोड़ा।²⁰ मैं जानता हूँ कि मैंने पाप किये हैं। मेरे स्वामी राजा, यही कारण है कि मैं यूसुफ के परिवार* का पहला व्यक्ति हूँ जो आज आपसे मिलने आया हूँ।”

²¹ किन्तु सरूयाह के पुत्र अबीशै ने कहा, “हमें शिमी को अवश्य मार डालना चाहिये क्योंकि इसने यहोवा के चुने राजा के विरुद्ध बुरा होने की याचना की।”

²² दाऊद ने कहा, “सरूयाह के पुत्रों, मैं तुम्हारे साथ क्या करूँ? आज तुम मेरे विरुद्ध हो। कोई व्यक्ति इज़्राएल में मारा नहीं जाएगा। आज मैं जानता हूँ कि मैं इज़्राएल का राजा हूँ।”

²³ तब राजा ने शिमी से कहा, “तुम मरोगे नहीं।” राजा ने शिमी को वचन दिया कि वह शिमी को स्वयं नहीं मारेगा।*

मपीबोशेत दाऊद से मिलने जाता है

²⁴ शाऊल का पौत्र* मपीबोशेत राजा दाऊद से मिलने आया। मपीबोशेत ने उस सारे समय तक अपने पैरों की चिन्ता नहीं की, अपनी मूँछों को कतरा नहीं या अपने वस्त्र नहीं धोए जब तक राजा यरूशलेम छोड़ने के बाद पुनः शान्ति के साथ वापिस नहीं आ गया।²⁵ मपीबोशेत यरूशलेम से राजा के पास मिलने आया। राजा ने मपीबोशेत से पूछा, “तुम मेरे साथ उस समय क्यों नहीं गए जब मैं यरूशलेम से भाग गया था?”

²⁶ मपीबोशेत ने उत्तर दिया, “हे राजा, मेरे स्वामी! मेरे सेवक (सीबा) ने मुझे मूर्ख बनाया। मैंने सीबा से कहा, ‘मैं विकलांग हूँ। अतः गधे पर काठी लगाओ। तब मैं गधे पर

यूसुफ का परिवार संभवतः इसका अर्थ वे इज़्राएली हैं जो अबशालोम के समर्थक थे। कई बार एंजेल यूसुफ का पुत्र नाम उत्तरी इज़्राएल के सभी परिवार समूहों के लिये प्रयुक्त हुआ है।
राजा ने ... मारेगा दाऊद ने शिमी को नहीं मारा किन्तु, कुछ वर्ष बाद दाऊद का पुत्र सुलेमान ने उसे वध करने का आदेश दिया। देखो 1 राजा 2:44-46

पौत्र शाब्दिक, “पुत्र”।

बैठंगा, और राजा के साथ जाऊँगा।* किन्तु मेरे सेवक ने मुझे धोखा दिया।²⁷ उसने मेरे बारे में आपसे बुरी बातें कहीं। किन्तु मेरे स्वामी, राजा परमेश्वर के यहाँ देवदूत के समान हैं। आप वही करें जो आप उचित समझते हैं।²⁸ आपने मेरे पितामह के सारे परिवार को मार दिया होता। किन्तु आपने यह नहीं किया। आपने मुझे उन लोगों के साथ रखा जो आपकी मेज पर खाते हैं। इसलिये मैं राजा से किसी बात के लिये शिकायत करने का अधिकार नहीं रखता।”

²⁹ राजा ने मपीबोशेत से कहा, “अपनी समस्याओं के बारे में अधिक कुछ न कहो। मैं यह निर्णय करता हूँ! तुम और सीबा भूमि का बंटवारा कर सकते हो।”

³⁰ मपीबोशेत ने राजा से कहा, “सीबा को सारी भूमि ले लेने दें! क्यों? क्योंकि मेरे स्वामी राजा अपने महल में शान्तिपूर्वक लौट आये हैं।”

दाऊद बर्जिल्लै से अपने साथ यरूशलेम चलने को कहता है

³¹ गिलाद का बर्जिल्लै रोगलीम से आया। वह राजा दाऊद के साथ यरदन नदी तक आया। वह राजा के साथ, यरदन नदी को उसे पार कराने के लिये गया।³² बर्जिल्लै बहुत बूढ़ा आदमी था। वह अस्सी वर्ष का था। जब दाऊद महनेम में ठहरा था तब उसने उसको भोजन तथा अन्य चीजें दी थीं। बर्जिल्लै यह सब कर सकता था क्योंकि वह बहुत धनी व्यक्ति था।³³ दाऊद ने बर्जिल्लै से कहा, “नदी के पार मेरे साथ चलो। यदि तुम मेरे साथ यरूशलेम में रहोगे तो वहाँ मैं तुम्हारी देखभाल करूँगा।”

³⁴ किन्तु बर्जिल्लै ने राजा से कहा, “क्या आप जानते हैं कि मैं कितना बूढ़ा हूँ? क्या आप समझते हैं कि मैं आपके साथ यरूशलेम को जा सकता हूँ? ³⁵ मैं अस्सी वर्ष का हूँ। मैं इतना अधिक बूढ़ा हूँ कि मैं यह नहीं बता सकता कि अच्छा क्या है और बुरा क्या है। मैं इतना अधिक बूढ़ा हूँ कि मैं जो खाता पीता हूँ उसका स्वाद नहीं ले सकता। मैं इतना बूढ़ा हूँ कि आदमियों और स्त्रियों के गाने की आवाज भी नहीं सुन सकता। आप मेरे साथ परेशान होना क्यों चाहते हैं? ³⁶ मैं आपकी ओर से पुरस्कार नहीं चाहता। मैं

मैंने सीबा ... जाऊँगा संभवतः मपीबोशेत यह कह रहा था कि उसका सेवक गधा ले गया और मपीबोशेत को छोड़ गया। पढ़े 2 शमू. 16:1-4

आपके साथ नजदीक के रास्ते से यरदन नदी को पार करूँगा।³⁷ किन्तु, कृपया मुझे वापस लौट जाने दें। तब मैं अपने नगर में मरूँगा और अपने माता-पिता की कब्र में दफनाया जाऊँगा। किन्तु यह किम्हाम आपका सेवक हो सकता है। मेरे प्रभु राजा उसे अपने साथ लौटने दें। जो आप चाहें, उसके साथ करें।”

³⁸ राजा ने उत्तर दिया, “किम्हान मेरे साथ लौटेंगा। मैं तुम्हारे कारण उस पर दयालु रहूँगा। मैं तुम्हारे लिये कुछ भी कर सकता हूँ।”

दाऊद घर लौटता है

³⁹ राजा ने बर्जिल्लै का चुम्बन किया और उसे आशीर्वाद दिया। बर्जिल्लै घर लौट गया। और राजा तथा सभी लोग नदी के पार वापस गये।

⁴⁰ राजा यरदन नदी को पार करके गिलगाल गया। किम्हाम उसके साथ गया, यहूदा के सभी लोगों तथा आधे इम्राएल के लोगों ने दाऊद को नदी के पार पहुँचाया।

इम्राएली यहूदा के लोगों से तर्क-वितर्क करते हैं

⁴¹ सभी इम्राएली राजा के पास आए। उन्होंने राजा से कहा, “हमारे भाई यहूदा के लोग, आपको चुरा ले गये और आपको और आपके परिवार को, आपके लोगों के साथ यरदन नदी के पार ले आए। क्यों?”

⁴² यहूदा के सभी लोगों ने इम्राएलियों को उत्तर दिया, “क्योंकि राजा हमारा समीपी सम्बन्धी है। इस बात के लिये आप लोग हमसे क्रोधित क्यों हैं? हम लोगों ने राजा की कीमत पर भोजन नहीं किया है। राजा ने हम लोगों को कोई भेंट नहीं दी।”

⁴³ इम्राएलियों ने उत्तर दिया, “हम लोग दाऊद के राज्य के दस भाग हैं।* इसलिये हम लोगों का अधिकार दाऊद पर तुमसे अधिक है। किन्तु तुम लोगों ने हमारी उपेक्षा की। क्यों? वे हम लोग थे जिन्होंने सर्वप्रथम अपने राजा को वापस लाने की बात की।”

किन्तु यहूदा ने लोगों ने इम्राएलियों को बड़ा गन्दा उत्तर दिया। यहूदा के लोगों के शब्द इम्राएलियों के शब्दों से अधिक शत्रुतापूर्ण थे।

हम लोग ... है बिन्यामीन और यहूदा के दो परिवार समूह थे जो बाद में राज्य के बँटने पर यहूदा का राज्य बने। अन्य दस परिवार समूह इम्राएल राज्य में थे।

शेबा इम्राएलियों को दाऊद से अलग संचालित करता है

20 ऐसा हुआ कि बिक्री का पुत्र शेबा नाम का एक बुरा आदमी था। शेबा बिन्यामीन परिवार समूह का था। उसने तुरही बजाई और कहा, “हम लोगों का कोई हिस्सा दाऊद में नहीं है।

यिशै के पुत्र का कोई अंश हममें नहीं है। पूरे इम्राएली, हम लोग अपने डेरों में घर चले।”

² तब सभी इम्राएलियों ने दाऊद को छोड़ दिया, और बिक्री के पुत्र शेबा का अनुसरण किया। किन्तु यहूदा के लोग अपने राजा के साथ लगातार यरदन नदी से यरूशलेम तक बने रहे।

³ दाऊद अपने घर यरूशलेम को आया। दाऊद ने अपनी पत्नियों में से दस को घर की देखभाल के लिये छोड़ा था। दाऊद ने इन स्त्रियों को एक विशेष घरमें रखा। लोगों ने इस घर की रक्षा की। स्त्रियाँ उस घर में तब तक रहीं जब तक वे मरी नहीं। दाऊद ने उन्हें भोजन दिया, किन्तु उनके साथ शारीरिक सम्बन्ध नहीं किया। वे मरने के समय तक विधवा की तरह रहीं।

⁴ राजा ने अमासा से कहा, “यहूदा के लोगों से कहो कि वे मुझसे तीन दिन के भीतर मिले, और तुम्हें भी यहाँ आना होगा और मेरे सामने खड़ा होना होगा।”

⁵ तब अमासा यहूदा के लोगों को एक साथ बुलाने गया। किन्तु उसने, जितना समय राजा ने दिया था, उससे अधिक समय लिया।”

दाऊद अबीशै से शेबा को मारने को कहता है

⁶ दाऊद ने अबीशै से कहा, “बिक्री का पुत्र शेबा हम लोगों के लिये उससे भी अधिक खतरनाक है जितना अबशालोम था। इसलिये मेरे सेवकों को लो और शेबा का पीछा करो। शेबा को प्राचीर वाले नगरो में पहुँचने से पहले इसे शीघ्रता से मरो। यदि शेबा प्राचीर वाले नगरो में पहुँच जायेगा तो वह हम लोगों से बच निकलेगा।”

⁷ योआब के व्यक्ति करेती, पलेती और सैनिक यरूशलेम से बाहर गये। उन्होंने बिक्री के पुत्र शेबा का पीछा किया।

दाऊद ... रखा दाऊद के पुत्र अबशालोम ने दाऊद की इन “रखैलों” को, जिनके साथ शारीरिक सम्बन्ध करके, भ्रष्ट कर दिया था। देखे 2शमू. 16:21-22

योआब अमासा को मार डालता है

⁸जब योआब और सेना गिबोन की विशाल चट्टान तक आई, अमासा उनसे मिलने आया। योआब अपने सैनिक पोशाक में था। योआब ने पेटी बांध रखी थी। उसकी तलवार उसकी म्यान में थी। योआब अमासा से मिलने आगे बढ़ा और उसकी तलवार म्यान से गिर पड़ी। योआब ने तलवार को उठा लिया और उसे अपने हाथ में रखा। ⁹योआब ने अमासा से पूछा, “भाई, तुम हर तरह से कुशल तो हो?”

योआब ने चुम्बन करने के लिये अपने दायें हाथ से, अमासा को उसकी दाढ़ी से सहारे पकड़ा। ¹⁰अमासा ने उस तलवार पर ध्यान नहीं दिया जो उसके हाथ में थी। योआब ने अमासा के पेट में तलवार घुसेड़ दी और उसकी आँत भूमि पर आ पड़ी। योआब को अमासा पर दुबारा चोट नहीं करनी पड़ी, वह पहले ही मर चुका था।

दाऊद के लोग शेबा की खोज में लगे रहे

तब योआब और उसका भाई अबीशै दोनों ने बिक्री के पुत्र शेबा की खोज जारी रखी। ¹¹योआब के युवकों में से एक व्यक्ति अमासा के शव के पास खड़ा रहा। इस युवक ने कहा, “हर एक व्यक्ति जो योआब और दाऊद का समर्थन करता है, उसे योआब का अनुसरण करना चाहिये। शेबा का पीछा करने में उसकी सहायता करो।”

¹²अमासा अपने ही खून में सड़क के बीच पड़ा रहा। सभी लोग शव को देखने रुकते थे। इसलिये युवक अमासा के शव को सड़क से ले गया और उसे मैदान में रख दिया। तब उनसे अमासा के शव पर एक कपड़ा डाल दिया। ¹³जब अमासा का शव सड़क से हटा लिया गया, सभी लोगों ने योआब का अनुसरण किया। वे बिक्री के पुत्र शेबा का पीछा करने योआब के साथ गए।

शेबा आबेल बेतमाका को बच निकलता है

¹⁴बिक्री का पुत्र शेबा सभी इज़्राएल के परिवार समूहों से होता हुआ आबेल बेतमाका पहुँचा। सभी बेरी लोग भी एक साथ आए और उन्होंने शेबा का अनुसरण किया।

¹⁵योआब और उसके लोग आबेल और बेतमाका आए। योआब की सेना ने नगर को घेर लिया। उन्होंने नगर दीवार के सहारे मिट्टी के ढेर लगाए। ऐसा करने

के बाद वे दीवार के ऊपर चढ़ सकते थे। तब योआब के सैनिकों ने दीवार से पत्थरों को तोड़ना प्रारम्भ किया। वे दीवार को गिरा देना चाहते थे।

¹⁶एक बुद्धिमती स्त्री नगर की ओर से चिल्लाई। उसने कहा, “मेरी सुनो! योआब को यहाँ बुलाओ। मैं उससे बात करना चाहती हूँ।”

¹⁷योआब उस स्त्री के पास बात करने गया। उस स्त्री ने पूछा, “क्या तुम योआब हो?”

योआब ने उत्तर दिया, “हाँ, मैं हूँ।”

तब उस स्त्री ने योआब से कहा, “मैं जो कहूँ सुनो।”

योआब ने कहा, “मैं सुन रहा हूँ।”

¹⁸तब उस स्त्री ने कहा, “अतीत में लोग कहते थे, ‘आबेल में सलाह माँगो तब समस्या सुलझ जाएगी।’”

¹⁹मैं इज़्राएल के राजभक्त तथा शान्तिप्रिय लोगों में से एक हूँ। तुम इज़्राएल के एक महत्वपूर्ण नगर को नष्ट कर रहे हो। तुम्हें, वह कोई भी चीज, जो यहाँवा की है, नष्ट नहीं करनी चाहिये।”

²⁰योआब ने कहा, “नहीं, मैं कुछ भी नष्ट नहीं करना चाहता! * ²¹किन्तु एक व्यक्ति एप्रैम के पहाड़ी प्रदेश का है। वह बिक्री का पुत्र शेबा है। वह राजा दाऊद के विरुद्ध हो गया है। यदि तुम उसे मेरे पास लाओ तो मैं नगर को शान्त छोड़ दूँगा।”

उस स्त्री ने कहा, “बहुत ठीक, उसका सिर दीवार के ऊपर से तुम्हारे लिये फेंक दिया जायेगा।”

²²तब उस स्त्री ने बड़ी बुद्धिमानी से नगर के सभी लोगों से बातें कीं। लोगों ने बिक्री के पुत्र शेबा का सिर काट डाला। तब लोगों ने योआब के लिये शेबा का सिर नगर की दीवार पर से फेंक दिया।

इसलिये योआब ने तुरही बजाई और सेना ने नगर को छोड़ दिया। हर एक व्यक्ति अपने घर में गया, और योआब राजा के पास यरूशलेम लौटा।

दाऊद के सेवक लोग

²³योआब इज़्राएल की सारी सेना का नायक था। यहोयाब का पुत्र बनायाह, करेतियों और प्लेतियों का संचालन करता था। ²⁴अदोराम उन लोगों का संचालन करता था जो कठिन श्रम करने के लिये विवश थे। अहिलूद का पुत्र

नहीं, मैं ... चाहता शाब्दिक “इससे दूर, बहुत दूर यह हो। मैं निगलना या नष्ट करना नहीं चाहता।”

यहोशापात इतिहासकार था। ²⁵शेवा सचिव था। सादोक और एब्यातार याजक थे। ²⁶और याईरी दाऊद का प्रमुख याजक था।

शाऊल का परिवार दण्डित हुआ

21 दाऊद के समय में भूखमरी का काल आया। इस बार भूखमरी तीन वर्ष तक रही। दाऊद ने यहोवा से प्रार्थना की। यहोवा ने उत्तर दिया, “इस भूखमरी का कारण शाऊल और उसका हत्यारा परिवार* हैं। इस समय भूखमरी आई क्योंकि शाऊल ने गिबोनियों को मार डाला।” ² (गिबोनी इम्राएली नहीं थे। वे ऐसे एमोरियों के समूह थे जो अभी तक जीवित छोड़ दिये गये थे। इम्राएलियों ने प्रतिज्ञा की थी कि वे गिबोनी पर चोट नहीं करेंगे।* किन्तु शाऊल को इम्राएल और यहूदा के प्रति गहरा लगाव था। इसलिये उसने गिबोनियों को मारना चाहा।)

राजा दाऊद ने गिबोनी को एक साथ इकट्ठा किया। उसने उनसे बातें कीं। ³दाऊद ने गिबोनी से कहा, “मैं आप लोगों के लिये क्या कर सकता हूँ? इम्राएल के पापों को धोने के लिए मैं क्या कर सकता हूँ जिससे आप लोग यहोवा के लोगों को आशीर्वाद दे सकें?”

⁴गिबोनी ने दाऊद से कहा, “शाऊल और उसके परिवार के पास इतना सोना-चौदी नहीं है कि वे उसके बदले उसे दे सकें जो उन्होंने काम किये। किन्तु हम लोगों के पास इम्राएल के किसी व्यक्ति को भी मारने का अधिकार नहीं है।”

दाऊद ने पूछा, “किन्तु मैं तुम्हारे लिये क्या कर सकता हूँ?”

⁵गिबोनी ने दाऊद से कहा, “शाऊल ने हमारे विरुद्ध योजनायें बनाई। उसने हमारे सभी लोगों को, जो इम्राएल में बचे हुए हैं, नष्ट करने का प्रयत्न किया। ⁶शाऊल यहोवा का चुना हुआ राजा था। इसलिये उसके सात पुत्रों को हम लोगों के सामने लाया जाये। तब हम लोग उन्हें शाऊल के गिबा पर्वत पर यहोवा के सामने फाँसी चढ़ा देंगे।”

राजा दाऊद ने कहा, “मैं उन पुत्रों को तुम्हें दे दूँगा।”

⁷किन्तु राजा ने योनातन के पुत्र मपीबोशेत की रक्षा की।

हत्यारा परिवार शाब्दिक “खूनी खानदान।”

इम्राएलियों ... नहीं करेंगे यह यहोशू के समय में हुआ था जब गिबोनी ने धोखा दिया था। पढ़े यहोशू 9:3-15

योनातन शाऊल का पुत्र था। दाऊद ने यहोवा के नाम पर योनातन से प्रतिज्ञा की थी।* इसलिये राजा ने मपीबोशेत को उन्हें चोट नहीं पहुँचाने दिया। ⁸किन्तु राजा ने अर्मोनी, और मपीबोशेत,* रिस्पा और शाऊल के पुत्रों को लिया (रिस्पा अय्या की पुत्री थी)। राजा ने रिस्पा के इन दो पुत्रों और शाऊल की पुत्री मीकल के पाँचों पुत्रों को लिया। महोल नगर का निवासी बर्जिल्लै का पुत्र अद्रीएल मेराब के सभी पाँच पुत्रों का पिता था। ⁹दाऊद ने इन सात पुत्रों को गिबोनी को दे दिया। तब गिबोनी ने इन सातों पुत्रों को यहोवा के सामने गिबा पर्वत पर फाँसी दे दी। ये सातों पुत्र एक साथ मरे। वे फसल की कटाई के पहले दिन मार डाले गए। (जौ की कटाई आरम्भ होने जा रही थी।)

दाऊद और रिस्पा

¹⁰अय्या की पुत्री रिस्पा ने शोक के वस्त्र लिये और उसे चट्टान पर रख दिया। वह वस्त्र फसल की कटाई आरम्भ होने से लेकर जब तक वर्षा हुई चट्टान पर पड़ा रहा। दिन में रिस्पा अपने पुत्रों के शव को आकाश के पक्षियों द्वारा स्पर्श नहीं होने देती थी। रात को रिस्पा खेतों के जानवरों को अपने पुत्रों के शवों को छूने नहीं देती थी।

¹¹लोगों ने दाऊद को बताया, जो कुछ शाऊल की दासी अय्या की पुत्री रिस्पा कर रही थी। ¹²तब दाऊद ने शाऊल और योनातन की अस्थियाँ याबेश गिलाद के लोगों से लीं। (याबेश के लोगों ने इन अस्थियों को बेतशान के सार्वजनिक रास्ते से चुरा ली थी। यह सार्वजनिक रास्ता बेतशान में वहाँ है जहाँ पलिशितयों ने शाऊल और योनातन के शवों को लटकवाया था। पलिशितयों ने इन शवों को शाऊल को गिलबो में मारने के बाद लटकवाया था।)

¹³दाऊद, शाऊल और उसके पुत्र योनातन की अस्थियों को, गिलाद से लाया। तब लोगों ने शाऊल के सात पुत्रों के शवों को इकट्ठा किया जो फाँसी चढ़ा दिये गये थे। ¹⁴उन्होंने शाऊल और उसके पुत्र योनातन की अस्थियों को

दाऊद ने ... की थी दाऊद और योनातन ने परस्पर प्रतिज्ञा की थी कि वे दूसरे के परिवार को हानि नहीं पहुँचायेंगे। पढ़े 1 शमू, 20:12-23, 42

मपीबोशेत यह मपीबोशेत नाम का दूसरा व्यक्ति है, योनातन का पुत्र नहीं।

बिन्यामीन के जेला स्थान में दफनाया। लोगों ने शवों को शाऊल के पिता कीश की कब्र में दफनाया। लोगों ने वह सब किया जो राजा ने आदेश दिया। तब परमेश्वर ने देश के लिये की गई उनकी प्रार्थना सुनी।

पलिशतियों के साथ युद्ध

¹⁵पलिशतियों ने इम्राएलियों के विरुद्ध फिर युद्ध छेड़ा। दाऊद और उसके लोग पलिशतियों से लड़ने गए। किन्तु दाऊद थक गया और कमजोर हो गया। ¹⁶रपाई के वंश में से यिशाबोबनोब एक था। यिशाबोबनोब के भाले का वजन साढ़े सात पौंड था। यिशाबोबनोब के पास एक नयी तलवार थी। उसने दाऊद को मार डालने की योजना बनाई। ¹⁷किन्तु सरूयाह के पुत्र अबीशै ने उस पलिशती को मार डाला और दाऊद के जीवन को बचाया।

तब दाऊद के लोगों ने दाऊद से प्रतिज्ञा* की। उन्होंने उससे कहा, “तुम हम लोगों के साथ भविष्य में युद्ध करने नहीं जा सकते। यदि तुम फिर युद्ध में जाते हो और मार दिये जाते हो तो इम्राएल अपने सबसे बड़े मार्ग दर्शक को खो देगा।”*

¹⁸तत्पश्चात्, गोब में पलिशतियों के साथ दूसरा युद्ध हुआ। हूशाई सिब्वके ने सप एक अन्य रपाईवंशी पुरुष को मार डाला।

¹⁹तब गोब में फिर पलिशतियों से एक अन्य युद्ध छिड़ा। यारयोरगीम के पुत्र एलहनान ने, जो बेतलेहेम का था, गती गोल्यत* को मार डाला। गोल्यत का भाला जुलाहे की छड़ के बराबर लम्बा था।

²⁰गत में फिर युद्ध आरम्भ हुआ। वहाँ एक विशाल व्यक्ति था। उस व्यक्ति के हर एक हाथ में छः छः उंगलियाँ और हर एक पैर में छः-छः अंगूठे थे। सब मिलाकर उसकी चौबीस उंगलियाँ और अंगूठे थे। यह व्यक्ति भी एक रपाईवंशी था। ²¹इस व्यक्ति ने इम्राएल को ललकारा।

प्रतिज्ञा परमेश्वर को विशेष वचन देना। प्रायः कोई व्यक्ति जब प्रतिज्ञा करता है, वह परमेश्वर को विशेष बलि-भेंट चढ़ता है, जब वह कुछ समय तक कुछ विशेष कर चुकता है।

यदि ... खो देगा शाब्दिक “तुम इम्राएल के दीपक को बुझा दोगे।”

गती गोल्यत इति. 20:5 में इस पलिशती को गोल्यत का भाई लहमी कहा गया है।

किन्तु योनातन ने इस व्यक्ति को मार डाला। (योनातन दाऊद के भाई शिमी का पुत्र था।)

²²ये चारों व्यक्ति गत के रपाईवंशी थे। वे सभी दाऊद और उसके लोगों द्वारा मारे गए।

यहोवा की स्तुति के लिये दाऊद का गीत

22 यहोवा ने दाऊद को शाऊल तथा अन्य सभी शत्रुओं से बचाया था। दाऊद ने उस समय यह गीत गाया,

2 यहोवा मेरी चट्टान,
मेरा गढ़,

मेरा शरण-स्थल है।

3 मैं सहायता पाने को परमेश्वर तक दौड़ूंगा।
वह मेरी सुरक्षा-चट्टान है।
परमेश्वर मेरी ढाल है।

उसकी शक्ति मेरी रक्षक है।

यहोवा मेरी ऊँचा गढ़ है, और

मेरी सुरक्षा का स्थान है।

मेरा रक्षक कष्टों से मेरी रक्षा करता है।

4 उन्होंने मेरा उपहास किया।

मैंने सहायता के लिये यहोवा को पुकारा,

यहोवा ने मुझे मेरे शत्रुओं से बचाया!

5 मेरे शत्रु मुझे मारना चाहते थे।

मृत्यु-तरंगों ने मुझे लपेट लिया।

विपत्तियाँ बाढ़-सी आईं,

उन्होंने मुझे भयभीत किया।

6 कब्र की रस्सियाँ मेरे चारों ओर लिपटीं,

मैं मृत्यु के जाल में फँसा।

7 मैं विपत्ति में था, किन्तु मैंने यहोवा को पुकारा।

हाँ, मैंने अपने परमेश्वर को पुकारा

वह अपने उपासना गृह में था,

उसने मेरी पुकार सुनी,

मेरी सहायता की पुकार उसके कानों में पड़ी।

8 तब धरती में कम्पन हुआ, धरती डोल उठी,

आकाश के आधार स्तम्भ काँप उठे।

क्यों? क्योंकि यहोवा क्रोधित था।

9 उसकी नाक से धुआँ निकला,

उसके मुख से जलती चिनगारियाँ छिटकीं,

उससे दहकते अंगारे निकल पड़े।

- 10 यहोवा ने आकाश को फाड़ कर
खोल डाला, और नीचे आया,
वह सघन काले मेघ पर खड़ा हुआ!
- 11 यहोवा करूब (स्वर्गदूत) पर बैठा, और उड़ा,
वह पवन के पंखों पर चढ़ कर उड़ गया।
- 12 यहोवा ने तम्बू-से काले मेघों को
अपने चारों ओर लपेट लिया,
उसने सघन मेघों से जल इकट्ठा किया।
- 13 उसका तेज इतना प्रखर था, मानो
बिजली की चमक वहाँ से आई हो।
- 14 यहोवा गगन से गरजा!
परमेश्वर, अति उच्च, बोला।
- 15 यहोवा ने बाण से शत्रुओं को बिखराया,
यहोवा ने बिजली भेजी,
और लोग भय से भागे।
- 16 धरती की नींव का आवरण हट गया,
तब लोग सागर की गहराई देख सकते थे।
वे हटे, क्योंकि यहोवा ने बातें की,
उसकी अपनी नाक से तप्त वायु
निकलने के कारण।
- 17 यहोवा गगन से नीचे पहुँचा,
यहोवा ने मुझे पकड़ लिया,
उसने मुझे गहरे जल (विपत्ति) से
निकाल लिया।
- 18 उसने उन लोगों से बचाया,
जो घृणा करते थे, मुझसे
मेरे शत्रु मुझसे अधिक शक्तिशाली थे,
अतः उसने मेरी रक्षा की।
- 19 मैं विपत्ति में था, जब मेरे शत्रुओं का
मुझ पर आक्रमण हुआ,
किन्तु मेरे यहोवा ने मेरी सहायता की।
- 20 यहोवा मुझे सुरक्षा में ले आया,
उसने मेरी रक्षा की, क्योंकि
वह मुझसे प्रेम करता है।
- 21 यहोवा मुझे पुरस्कार देता है,
क्योंकि मैंने उचित किया।
यहोवा मुझे पुरस्कार देता है,
क्योंकि मेरे हाथ पाप रहित हैं।
- 22 क्यों? क्योंकि मैंने यहोवा के
नियमों का पालन किया।
मैंने अपने परमेश्वर के विरुद्ध पाप नहीं किया।
- 23 मैं सदा याद करता हूँ यहोवा का निर्णय,
मैं उसके नियमों को मानता हूँ।
- 24 यहोवा जानता है-मैं अपराधी नहीं हूँ,
मैं अपने को पापों से दूर रखता हूँ।
- 25 यही कारण है कि यहोवा मुझे पुरस्कार देता है,
मैं न्यायोचित रहता हूँ।
यहोवा देखा है, कि मैं स्वच्छ जीवन बिताता हूँ।
- 26 यदि कोई व्यक्ति तुझसे प्रेम करेगा तो तू,
अपनी प्रेमपूर्ण दया उस पर करेगा।
यदि कोई तेरे प्रति सच्चा है,
तब तू भी उसके प्रति सच्चा होगा!
- 27 यदि कोई तेरे लिये अच्छा जीवन बिताता है,
तब तू भी उसके लिये अच्छा बनेगा।
किन्तु यदि कोई व्यक्ति तेरे विरुद्ध होता है,
तब तू भी उसके विरुद्ध होगा।
- 28 तू विपत्ति में वित्रम लोगों को बचायेगा,
किन्तु तू घमण्डी को नीचा करेगा।
- 29 यहोवा तू मेरा दीपक है, यहोवा मेरे चारों
ओर के अंधेरे को प्रकाश में बदलता है।
- 30 तू सैनिकों के दल को हराने में,
मेरी सहायता करता है।*
- परमेश्वर की शक्ति से मैं दीवार के
ऊपर चढ़ सकता हूँ।
- 31 परमेश्वर की शक्ति पूर्ण है।
यहोवा के वचन की जाँच हो चुकी है।
यहोवा रक्षा के लिये, अपने पास
भागने वाले हर व्यक्ति की ढाल है।
- 32 यहोवा के अतिरिक्त कोई अन्य परमेश्वर नहीं,
हमारे परमेश्वर के अतिरिक्त
अन्य कोई आश्रय-शिला नहीं।
- 33 परमेश्वर मेरा दृढ़ गढ़ है वह निर्दोषों की
शुद्ध आत्माओं की सहायता करता है।
- 34 यहोवा मेरे पैरों को हिरन के पैरों-सा तेज
बनाता है, वह उच्च स्थानों पर
मुझे दृढ़ करता है।

- 35 यहोवा मुझे युद्ध की शिक्षा देता है,
अतः मेरी भुजायें पीतल के धनुष को
चला सकती हैं।
- 36 तू ढाल की तरह, मेरी रक्षा करता है।
तेरी सहायता ने मुझे विजेता बनाया है।
- 37 तूने मेरा मार्ग विस्तृत किया है,
जिस्से मेरे पैर फिसले नहीं।
- 38 मैंने अपने शत्रुओं का पीछा किया,
मैंने उन्हें नष्ट किया,
मैं तब तक नहीं लौटा,
जब तक शत्रु नष्ट न हुए।
- 39 मैंने अपने शत्रुओं को नष्ट किया है,
मैंने उन्हें पूरी तरह नष्ट किया है।
वे फिर उठ नहीं सकते,
हाँ मेरे शत्रु मेरे पैरों के तले गिरे।
- 40 परमेश्वर तूने मुझे युद्ध के लिये,
शक्तिशाली बनाया।
तूने मेरे शत्रुओं को हराया है।
- 41 तूने मेरे शत्रुओं को भगाया है, अतः मैं उन लोगों
को हरा सकता हूँ जो मुझसे घृणा करते हैं।
- 42 मेरे शत्रुओं ने सहायता चाही,
किन्तु उनका रक्षक कोई नहीं था।
उन्होंने यहोवा से सहायता माँगी,
लेकिन उसने उत्तर नहीं दिया।
- 43 मैं अपने शत्रुओं को कूटकर टुकड़े-टुकड़े
करता हूँ, वे भूमि पर धूलि से हो जाते हैं।
मैंने उन्हें सड़क की कीचड़ की
तरह रौंद दिया।
- 44 तूने तब भी मुझे बचाया है, जब
मेरे लोगों ने मेरे विरुद्ध लड़ाई की।
तूने मुझे राष्ट्रों का शासक बनाये रखा,
वे लोग भी मेरी सेवा करेंगे,
जिन्हें मैं नहीं जानता।
- 45 अन्य देशों के लोग मेरी आज्ञा मानते हैं,
जैसे ही सुनते हैं, तो शीघ्र ही
मेरी आज्ञा स्वीकार करते हैं।
- 46 अन्य देशों के लोग भयभीत होंगे,
वे अपने छिपने के स्थानों से
भय से काँपते निकलेंगे।

- 47 यहोवा शाश्वत है, मेरी आश्रय
चट्टान* की स्तुति करो!
परमेश्वर महान है!
वह आश्रय-चट्टान है, जो मेरा रक्षक है।
- 48 वह परमेश्वर है, जो मेरे शत्रुओं को
मेरे लिये दण्ड देता है।
वह लोगों को मेरे अधीन करता है।
- 49 वह मुझे मेरे शत्रुओं से मुक्त करता है।
हाँ, तूने मुझे मेरे शत्रुओं से ऊपर उठाया।
तू मुझे, प्रहार करने के
इच्छुकों से बचाता है।
- 50 यहोवा, इसी कारण, हे यहोवा मैंने राष्ट्रों के
बीच में तूझ को धन्यवाद दिया,
यही कारण है कि मैं तेरे
नाम की महिमा गाता हूँ।
- 51 यहोवा अपने राजा की सहायता,
युद्ध में विजय पाने में करता है,
यहोवा अपने चुने हुये राजा से
प्रेम दया करता है।
वह दाऊद और उसकी
स्तान पर सदा दयालु रहेगा।

दाऊद के अन्तिम शब्द

23

- यिश्शै के पुत्र दाऊद के अन्तिम शब्द हैं,
दाऊद ने यह गीत गाया:
परमेश्वर द्वारा महान बना व्यक्ति कहता है,
वह याकूब के परमेश्वर द्वारा
चुना गया राजा है,
वह इम्राएल का मधुर गायक है।
- 2 यहोवा की आत्मा मेरे माध्मम से बोला।
उसके शब्द मेरी जीभ पर थे।
- 3 इम्राएल के परमेश्वर ने बातें कीं।
इम्राएल की आश्रय, चट्टान ने मुझसे कहा,
“वह व्यक्ति जो लोगों पर
न्यायपूर्ण शासन करता है,
वह व्यक्ति जो परमेश्वर को
सम्मान देकर शासन करता है।

चट्टान परमेश्वर का नाम। इससे ज्ञात होता है कि वह एक गढ़ या सुरक्षा के दृढ़ स्थान की तरह है।

- 4 वह उषाकाल के प्रकाश-सा होगा;
वह व्यक्ति मेघहीन प्रातः की तरह होगा,
वह व्यक्ति उस वर्षा के बाद की धूप सा
होगा;
वर्षा जो भूमि में कोमल घासें उगाती है।”
- 5 परमेश्वर ने मेरे परिवार को
शक्तिशाली बनाया था।
परमेश्वर ने मेरे साथ सदैव के लिये
एक वाचा की,
परमेश्वर ने यह वाचा पक्की की,
और वह इसे नहीं तोड़ेगा,
यह वाचा मेरी मुक्ति है,
यह वाचा वह सब है, जो मैं चाहता हूँ।
सत्य ही, यहोवा मेरे परिवार को
शक्तिशाली बनने देगा।
- 6 किन्तु सभी बुरे व्यक्ति काँटों की तरह हैं।
लोग काँटों को धारण नहीं करते,
वे उन्हें दूर फेंक देते हैं।
- 7 यदि कोई व्यक्ति उन्हें छूता है,
तो वे उस भाले के दंड की तरह चुभते हैं
जो लकड़ी तथा लोहे ले बना हो।
वे लोग काँटों की तरह होंगे।
वे आग में फेंक दिये जाएंगे, और
वे पूरी तरह भस्म हो जायेंगे।

तीन महायोद्धा

⁸दाऊद के सैनिकों के नाम ये हैं: तहकमोनी का रहने वाला योशेब्यशशेबेत। योशेब्यशशेबेत तीन महायोद्धाओं का नायक था। उसे एस्नी अदीनी भी कहा जाता था। योशेब्यशशेबेत ने एक बार में आठ सौ व्यक्तियों को मारा था।

⁹दूसरा, अहोही, दौदै का पुत्र एलीआज़ार था। एलीआज़ार उन तीन वीरों में से एक था, जो दाऊद के साथ उस समय थे जब उन्होंने पलिशतियों को चुनौती दी थी। पलिशती एक साथ युद्ध के लिये तब आये थे जब इम्राएली दूर चले गये थे। ¹⁰एलीआज़ार पलिशतियों के साथ तब तक लड़ता रहा जब तक वह बहुत थक नहीं गया। किन्तु वह अपनी तलवार को दृढ़ता से पकड़े रहा और युद्ध करता रहा। उस दिन यहोवा ने इम्राएलियों को बड़ी विजय दी।

लोग तब आए जब एलीआज़ार युद्ध जीत चुका था। किन्तु वे केवल बहुमूल्य चीजें शत्रुओं से लेने आए।

¹¹उसके बाद हरार का रहने वाला आगे का पुत्र शम्मा था। पलिशती एक साथ लड़ने लेही में आये थे। उन्होंने मसूर के खेतों में युद्ध किया था। लोग पलिशतियों के सामने भाग खड़े हुए थे। ¹²किन्तु शम्मा खेत के बीच खड़ा था। वह खेत के लिये लड़ा। उसने पलिशतियों को मार डाला। उस समय यहोवा ने बड़ी विजय दी।

¹³एक बार जब दाऊद अदुल्लाम की गुफा में था तीस योद्धाओं* में से तीन दाऊद के पास आए। ये तीनों व्यक्ति अदुल्लाम की गुफा तक रेंगते हुये गुफा तक दाऊद के पास आए। पलिशती सेना ने अपना डेरा रपाईम की घाटी में डाला था।

¹⁴उस समय दाऊद किले में था। कुछ पलिशती सैनिक वहाँ बेतलेहेम में थे। ¹⁵दाऊद की बड़ी इच्छा थी कि उसे उस के नगर का पानी मिले जहाँ उसका घर था। दाऊद ने कहा, “ओह, मैं चाहता हूँ कि कोई व्यक्ति बेतलेहेम के नगर-द्वार के पास के कुँए का पानी मुझे दे।” दाऊद सचमुच यह चाहता नहीं था, वह बातें ही बना रहा था।

¹⁶किन्तु तीनों योद्धा* पलिशती सेना को चीरते हुए निकल गये। इन तीनों वीरों ने बेतलेहेम के नगर-द्वार के पास के कुँए से पानी निकाला। तब तीनों वीर दाऊद के पास पानी लेकर आए। किन्तु दाऊद ने पानी पीने से इन्कार कर किया। उसने यहोवा के सामने उसे भूमि पर डाल दिया। ¹⁷दाऊद ने कहा, “यहोवा, मैं इसे पी नहीं सकता। यह उन व्यक्तियों का खून पीने जैसा होगा जिन्होंने अपने जीवन को मेरे लिये खतरे में डाला।” यही कारण था कि दाऊद ने पानी पीना अस्वीकार किया। इन तीनों योद्धाओं ने उस प्रकार के अनेक कार्य किये।

अन्य बहादुर सैनिक

¹⁸सरूयाह का पुत्र, योआब का भाई अबीशै तीनों योद्धाओं का प्रमुख था। अबीशै ने अपने भाले का उपयोग तीन सौ शत्रुओं पर किया और उन्हें मार डाला। वह इतना ही प्रसिद्ध हुआ जितने तीन योद्धा। ¹⁹अबीशै ने शेष तीन

तीस योद्धाओं ये दाऊद के अत्याधिक वीर सैनिकों का समूह था।

तीनो योद्धा ये दाऊद की सेना के सर्वाधिक वीर योद्धा थे।

योद्धाओं से अधिक सम्मान पाया। वह उनका प्रमुख हो गया। किन्तु वह तीन योद्धाओं का सदस्य नहीं बना।

²⁰यहोयादा का पुत्र बनायाह एक था। वह शक्तिशाली व्यक्ति का पुत्र था। वह कबसेल का निवासी था। बनायाह ने अनेक वीरता के काम किये। बनायाह ने मोआब के अरियल के दो पुत्रों को मार डाला। जब बर्फ गिर रही थी, बनायाह एक गड्ढे में नीचे गया और एक शेर को मार डाला। ²¹बनायाह ने एक मिश्री को मारा जो शक्तिशाली योद्धा था। मिश्री के हाथ में एक भाला था। किन्तु बनायाह के हाथ में केवल एक लाठी थी। बनायाह ने मिश्री के हाथ के भाले को पकड़ लिया और उससे छीन लिया। तब बनायाह ने मिश्री के अपने भाले से ही मिश्री को मार डाला। ²²यहोयादा के पुत्र बनायाह ने उस प्रकार के अनेक काम किये। बनायाह तीन वीरों में प्रसिद्ध था। ²³बनायाह ने तीन योद्धाओं से भी अधिक सम्मान पाया, किन्तु वह तीन योद्धाओं का सदस्य नहीं हुआ। बनायाह को दाऊद ने अपने रक्षकों का प्रमुख बनाया।

तीस महायोद्धा

²⁴तीस योद्धाओं में से एक योआब का भाई असाहेल था। तीस योद्धाओं के समूह में अन्य व्यक्ति ये थे: बेतलेहम के दोबे का पुत्र एल्हानन; ²⁵हेरोदी शम्मा, हेरोदी एलीका, ²⁶पेलेती, हेलेस; तकोई इक्केश का पुत्र ईरा; ²⁷अनातोती का अबीएजेर; हूशाई मबुने; ²⁸अहोही, सल्मोन; नतोपाही महरै; ²⁹नतोपाही के बाना का पुत्र हेलेब; गिबा के बिन्यामीन परिवार समूह रीबै का पुत्र हुतै; ³⁰पिरातोनी, बनायाह; गाश के नालों का हिदै; ³¹अराबा अबीअल्बोन; बहूरीमी अजमावेत; ³²शालबोनी एल्यहबा; याशेन के पुत्र योनातन; ³³हरारी शम्मा का पुत्र; अरारी शारार का पुत्र अहीआम; ³⁴माका का अहसबै का पुत्र एलीपेलेप्त; गीलोई अहीतोपेल का पुत्र एलीआम; ³⁵कर्मली हेप्रो; अराबी पारै; ³⁶सोबाई के नातान का पुत्र यिगाल; गादी बानी; ³⁷अम्मोनी सेलेक, बेरोती का नहरै; (नहरै सरूयाह के पुत्र योआब का कवच ले जाता था); ³⁸येतेरी ईरा येतेरी गारेब; ³⁹और हिती ऊरिय्याह सब मिलाकर ये सैंतीस थे।

दाऊद अपनी सेना को गिनना चाहता है

24 यहोवा फिर इम्राएल के विरुद्ध क्रोधित हुआ। यहोवा ने दाऊद को इम्राएलियों के विरुद्ध

कर दिया। दाऊद ने कहा, “जाओ, इम्राएल और यहूदा के लोगों को गिनो।”

²राजा दाऊद ने सेना के सेनापति योआब से कहा, “इम्राएल के सभी परिवार समूह में दान से बर्शैबातक जाओ, और लोगों को गिनो। तब मैं जान सकूँगा कि वहाँ कितने लोग हैं।”

³किन्तु योआब ने राजा से कहा, “यहोवा परमेश्वर आपको सौ गुणा लोग दे, और आपकी आँखे यह घटित होता हुआ देख सकें। किन्तु आप यह क्यों करना चाहते हैं?”

⁴राजा दाऊद ने दृढ़ता से योआब और सेना के नायको को लोगों की गणना करने का आदेश दिया। अतः योआब और सेना के नायक दाऊद के यहाँ से इम्राएल के लोगों को गिनने गए। ⁵उन्होंने यरदन नदी को पार किया। उन्होंने अपना डेरा अरोएर में डाला। उनका डेरा नगर की दायी ओर था। (नगर गाद की घाटी के बीच में है। नगर याजेर जाने के रास्तों में भी है।)

⁶तब वे तहतमीहोदशी के प्रदेश और गिलाद को गये। वे दान्यान और सीदोन के चारों ओर गए। ⁷वे सोर के किले को गये। वे हिब्बियों और कनानियों के सभी नगरों को गए। वे दक्षिणी यहूदा में बर्शैबा को गए। ⁸नौ महीने बीस दिन बाद वे पूरे प्रदेश का भ्रमण कर चुके थे। वे नौ महीने बीस दिन बाद यरूशलेम आए।

⁹योआब ने लोगों की सूची राजा को दी। इम्राएल में आठ लाख व्यक्ति थे जो तलवार चला सकते थे और यहूदा में पाँच लाख व्यक्ति थे।

यहोवा दाऊद को दण्ड देता है

¹⁰तब दाऊद गिनती करने के बाद लज्जित हुआ। दाऊद ने यहोवा से कहा, “मैंने यह कार्य कर के बहुत बड़ा पाप किया। यहोवा, मैं प्रार्थना करता हूँ कि तू मेरे पाप को क्षमा कर। मैंने बड़ी मूर्खता की है।”

¹¹जब दाऊद प्रातःकाल उठा, यहोवा का सन्देश गाद नबी को मिला जो कि दाऊद का दृष्टा था। ¹²यहोवा ने गाद से कहा, “जाओ, और दाऊद से कहो, ‘यहोवा जो कहता है वह यह है। मैं तुमको तीन विकल्प देता हूँ। उनमें से एक को चुनो जिसे मैं तुम्हारे लिये करूँ।’”

¹³गाद दाऊद के पास गया और उसने बात की। गाद ने दाऊद से कहा, “तीन में से एक को चुनो:

1 तुम्हारे लिये और तुम्हारे देश के लिये सात वर्ष की भूखमरी।

2 तुम्हारे शत्रु तुम्हारा पीछा तीन महीने तक करें।

3 तुम्हारे देश में तीन दिन तक बीमारी फैले।

इनके बारे में सोचो और निर्णय करो कि मैं इन में से यहोवा जिसने मुझे भेजा है, को कौन सी चीज बताऊँ।”

¹⁴दाऊद ने गाद से कहा, “मैं सचमुच विपत्ति में हूँ! किन्तु यहोवा बहुत कृपालु है। इसलिये यहोवा को हमें दण्ड देने दो! मुझे मनुष्यों से दंडित न होने दो।”

¹⁵इसलिये यहोवा ने इम्राएल में बीमारी भेजी। यह प्रातःकाल आरम्भ हुई और रुकने के निर्धारित समय तक रही। दान से बेशेबा तक सत्तर हजार लोग मर गए। ¹⁶स्वर्गदूत ने अपनी भुजा यरूशलेम की ओर उसे नष्ट करने के लिये उठाई। किन्तु जो बुरी बातें हुई उनके लिये यहोवा बहुत दुःखी हुआ। यहोवा ने उस स्वर्गदूत से कहा जिसने लोगों को नष्ट किया, “बहुत हो चुका! अपनी भुजा नीचे करो।” यहोवा का स्वर्गदूत यबूसी अरौना* के खलिहान के किनारे था।

दाऊद अरौना के खलिहान को खरीदता है

¹⁷दाऊद ने उस स्वर्गदूत को देखा जिसने लोगों को मारा। दाऊद ने यहोवा से बातें कीं। दाऊद ने कहा, “मैंने पाप किया है। मैंने गलती की है। किन्तु इन लोगों ने मेरा अनुसरण भेड़ की तरह किया। उन्होंने कोई गलती नहीं की। कृपया दण्ड मुझे और मेरे पिता के परिवार को दें।”

¹⁸उस दिन गाद दाऊद के पास आया। गाद ने दाऊद से कहा, “जाओ और एक वेदी यबूसी अरौना के खलिहान

में यहोवा के लिये बनाओ।” ¹⁹तब दाऊद ने वे काम किये जो गाद ने करने को कहा। दाऊद ने यहोवा के दिये आदेशों का पालन किया। दाऊद अरौना से मिलने गया। ²⁰जब अरौना ने निगाह उठाई, उसने राजा (दाऊद) और उसके सेवकों को अपने पास आते देखा। अरौना बाहर निकला और अपना माथा धरती पर टेकते हुए प्रणाम किया। ²¹अरौना ने कहा, “मेरे स्वामी, राजा, मेरे पास क्यों आए हैं?”

दाऊद ने उत्तर दिया, “तुमसे खलिहान खरीदने। तब मैं यहोवा के लिये वेदी बना सकता हूँ। तब बीमारी रुक जायेगी।”

²²अरौना ने दाऊद से कहा, “मेरे स्वामी राजा, आप कुछ भी बलि-भेंट के लिये ले सकते हैं। ये कुछ गायें होमबलि के लिये हैं अग्नि की लकड़ी के लिये दंवरी के औजार तथा बैलों का जूआ भी है। ²³हे राजा! मैं आपको हर एक चीज देता हूँ।” अरौना ने राजा से यह भी कहा, “यहोवा आपका परमेश्वर, आप पर प्रसन्न हो।”

²⁴किन्तु राजा ने अरौना से कहा, “नहीं! मैं तुमसे सत्य कहता हूँ, मैं तुमसे भूमि को उसकी कीमत देकर खरीदूँगा। मैं यहोवा अपने परमेश्वर को कुछ भी ऐसी होमबलि नहीं चढ़ाऊँगा जिसका कोई मूल्य मैंने न दिया हो।”

इसलिये दाऊद ने खलिहान और गायों को चाँदी के पचास शेकेल से खरीदा। ²⁵तब दाऊद ने वहाँ यहोवा के लिये एक वेदी बनाई। दाऊद ने होमबलि और मेलबलि चढ़ाई।

यहोवा ने देश के लिये उसकी प्रार्थना स्वीकार की। यहोवा ने इम्राएल में बीमारी रोक दी।

License Agreement for Bible Texts

World Bible Translation Center

Last Updated: September 21, 2006

Copyright © 2006 by World Bible Translation Center

All rights reserved.

These Scriptures:

- Are copyrighted by World Bible Translation Center.
- Are not public domain.
- May not be altered or modified in any form.
- May not be sold or offered for sale in any form.
- May not be used for commercial purposes (including, but not limited to, use in advertising or Web banners used for the purpose of selling online ad space).
- May be distributed without modification in electronic form for non-commercial use. However, they may not be hosted on any kind of server (including a Web or ftp server) without written permission. A copy of this license (without modification) must also be included.
- May be quoted for any purpose, up to 1,000 verses, without written permission. However, the extent of quotation must not comprise a complete book nor should it amount to more than 50% of the work in which it is quoted. A copyright notice must appear on the title or copyright page using this pattern: "Taken from the HOLY BIBLE: EASY-TO-READ VERSION™ © 2006 by World Bible Translation Center, Inc. and used by permission." If the text quoted is from one of WBTC's non-English versions, the printed title of the actual text quoted will be substituted for "HOLY BIBLE: EASY-TO-READ VERSION™." The copyright notice must appear in English or be translated into another language. When quotations from WBTC's text are used in non-saleable media, such as church bulletins, orders of service, posters, transparencies or similar media, a complete copyright notice is not required, but the initials of the version (such as "ERV" for the Easy-to-Read Version™ in English) must appear at the end of each quotation.

Any use of these Scriptures other than those listed above is prohibited. For additional rights and permission for usage, such as the use of WBTC's text on a Web site, or for clarification of any of the above, please contact World Bible Translation Center in writing or by email at distribution@wbtc.com.

World Bible Translation Center

P.O. Box 820648

Fort Worth, Texas 76182, USA

Telephone: 1-817-595-1664

Toll-Free in US: 1-888-54-BIBLE

E-mail: info@wbtc.com

WBTC's web site – World Bible Translation Center's web site: <http://www.wbtc.org>

Order online – To order a copy of our texts online, go to: <http://www.wbtc.org>

Current license agreement – This license is subject to change without notice. The current license can be found at: <http://www.wbtc.org/downloads/biblelicense.htm>

Trouble viewing this file – If the text in this document does not display correctly, use Adobe Acrobat Reader 5.0 or higher. Download Adobe Acrobat Reader from: <http://www.adobe.com/products/acrobat/readstep2.html>

Viewing Chinese or Korean PDFs – To view the Chinese or Korean PDFs, it may be necessary to download the Chinese Simplified or Korean font pack from Adobe. Download the font packs from: <http://www.adobe.com/products/acrobat/acrrasianfontpack.html>